समकालीन साहित्य, संस्कृति, कला और विचार का मासिक

# उत्तर प्रदेश

जून–2024, वर्ष 49

₹ 15/-

अंतरिक्ष

# डॉ. सुधा मौर्य की एक कविता

## साँसें

जिस राह पर तुम छोड़कर गए थे
आज भी उसी राह पर खड़ी हूँ
तुमने जाते– जाते पीछे
मुड़कर भी देखना लाजिमी न समझा
तुम्हें शायद डर था कि
मैं तुम्हें रोक न लूँ
या –
शायद तुम्हारा जाना मुश्किल न हो जाए
पर आज भी जब
दरवाज़े पर आहट होती है
कॉलबेल कभी–कभी बेवज़ह बजती है
तब दिल धक–धक करता है
लगता –
शायद तुम लौट आए हो
और कहोगे मुझसे
मन नहीं लगा तुम बिन
जी तो रहा था पर
ज़िंदगी थी तुम
इसलिए ज़िंदगी के पास
वापस दुबारा आया हूँ
क्या मुझे फिर स्वीकार करोगी?
हाँ! बोलो
फिर वैसा ही बेइंतिहा प्यार करोगी?
बोलो न...
मैं खड़ा हूँ इंतज़ार में
तुम्हारे छोटे से हाँ! के लिए
बोलो न...
पर तभी हवा ने
शरीर में सिहरन कर
तुम्हारी छुअन को जगा दिया
दिल बोला हाँ! करुँगी
हाँ!बेइंतिहा करुँगी
तुम जब–जब आओगे
तुम्हें तब–तब स्वीकार करुँगी
हाँ! मैं अपनी साँसों की साँस दूँगी
तुम जब परेशान होंगे
तब उस को खुद पर झेलूँगी
पर तुम्हें डगमगाने– उखड़ने नहीं दूँगी
नहीं जाने दूँगी तुम्हें
अपने से इतनी दूर
क्योंकि –
जब तुम जाते हो
साँसें तुम्हारी उखड़ती है
पर उस मंजर को
मैं जीती हूँ कि
तुमने मुझे कितना याद किया होगा
इसलिए –
अब तुम जब–जब सोते हो
तब–तब मैं जगती हूँ
पूछोगे नहीं क्यों?
हाँ! बताओ...
इतने धीमे से क्यों कहा?
सुन लेने दो जहाँ को
कि –
मैं 'तुम' और तुम 'मैं' है
इस तरह हम 'हम' है!!
अंतर– बाह्य का भेद अब मिट गया है
क्योंकि –
हमारी साँसों का सम्बन्ध
अब जुड़ गया है
साँस तुम लेते हो
पर जीती मैं हूँ
इस तरह तुममें
धीरे–धीरे मिल रही हूँ!!
अब अगर तुम जाओगे भी
पता है –
वापस मेरे पास ही आओगे
इसलिए –
अब मुक्त हूँ
निस्सीम गगन सी!!
और तुम लगते हो
विस्तृत धरा से!!!

पता : 11 बी/161, वृन्दावन कॉलोनी,
रायबरेली रोड, लखनऊ–226029
मो. : 9455076255

# अनुक्रम

उत्तर प्रदेश

❑ वर्ष 49 ❑ अंक 64
❑ जून, 2024

**कृतित्व**

- उत्कृष्ट कवि–कहानीकार भी थे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ❑ शिवराम पाण्डेय / 3

**यात्रा वृत्तान्त**

- प्राकृतिक सौन्दर्य का खज़ाना : भूटान ❑ पारूल बंसल / 7

**कहानी**

- पहली बार ❑ नाज़िश अंसारी / 11

**लघु कहानी**

- हौंसला ❑ रतन खंगारोत / 17

**कहानी**

- कसक ❑ अंजू त्रिपाठी

**कविताएँ**

- डॉ. सुधा मौर्य की एक कविता ❑ /आवरण–2
- प्रीति गुप्ता की एक कविता ❑ आवरण–3
- आरती श्रीवास्तव की एक कविता / 24
- विजयलक्ष्मी सिन्हा की एक कविता / 26
- समीर तिवारी की कविताएँ / 27
- हिमानी वर्मा की दो कविताएँ / 29

**पुस्तक समीक्षा**

- आस्था और अंधविश्वास के बीच की पड़ताल करती एक किताब ❑ डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी / 31

**संरक्षक एवं मार्गदर्शक :** ❑ **संजय प्रसाद**
प्रमुख सचिव, सूचना

**प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी :** ❑ **शिशिर**
सूचना निदेशक, उत्तर प्रदेश

**सम्पादकीय परामर्श :** ❑ **अंशुमान राम त्रिपाठी**
अपर निदेशक, सूचना
❑ **डॉ. मधु ताम्बे**
उपनिदेशक, सूचना
❑ **डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह**
सहा. निदेशक, सूचना

**प्रभारी सम्पादक :** ❑ **दिनेश कुमार गुप्ता**
उपसम्पादक, सूचना

**सहयोग सम्पादक :** ❑ **कुमकुम शर्मा**
**आवरण :** **अर्चिता मिश्र**
**भीतरी रेखांकन :** **रीतिका**
**सम्पादकीय संपर्क :** सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
मो. : 9450282802, 9412674759
ईमेल : upmasik@gmail.com
**दूरभाष : कार्यालय :** ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 2236198, 2239011

**पत्रिका information.up.nic.in वेबसाइट पर उपलब्ध है।**

❑ **एक प्रति का मूल्य** : पंद्रह रुपये
❑ **वार्षिक सदस्यता** : एक सौ अस्सी रुपये
❑ **द्विवार्षिक सदस्यता** : तीन सौ साठ रुपये
❑ **त्रैवार्षिक सदस्यता** : पांच सौ चालीस रुपये

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे मासिक पत्रिका 'उत्तर प्रदेश' और सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
—सम्पादक

# आवर्तन

**फूलों के गांव**
**फसलों के गांव**
**आओ चलें गीतों के गांव**
**महके कोई रह–रह के फूल**
**रेशम हुई राहों की धूल**

**बहती हुई अल्हड़ नदी**
**ढहते हुए यादों के फूल**
**चंदा के गांव**
**सूरज के गांव**
**आओ चलें तारों के गांव**

**–डॉ. ओम निश्चल**

कवि गीतकार, आलोचक और भाषा विद् ओम निश्चल जी के गीत अपनी पूरी जीवन्तता के साथ पाठकों के मन को छूते हुए प्रकृति से हरे–भरे गांव की टेढ़ी–मेढ़ी पगडंडियों पर ले जाते हैं। जहां वह स्वतः गुनगुनाते लगता है। प्रकृति को जो ले और महसूस करते हुए कवि उसके माध्यम से बहुत कुछ करते हैं। नई कविता से पहले हमारे साहित्य में गीतों की एक परम्परा रही है जिसमें नीरज, साहिर, शैलेन्द्र, कुंवर बेचैन, सोम ठाकुर, जयकुमार 'जलज' आदि ऐसे नाम हैं, जो सदियों तक अपने गीतों के माध्यम से लोगों के दिल दिमाग पर राज करते रहेंगे। नीरज का गीत 'अब तो मज़हब' कोई ऐसा भी चलाया जाय। जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाय। जिसमें कवि अपनी रचना मानवता का इंसानियत का संदेश देना चाहता है जहां एक विकसित सुशिक्षित समाज का निर्माण हो सके। गोपाल दास नीरज गीतों की दुनिया का एक अमिट हस्ताक्षर हैं। सदियां बीत जाने के बाद भी उनका 'कारवां गुजर गया गुबार देखते रहे" गीत ज़िन्दा रहेगा। नीरज के गीत हमें यथार्थ की उर्वर जमीन पर संवेदनाओं के साथ खड़े रहना, चलना सिखाते हैं तभी तो वे कहते हैं–

**'गीत जब मर जायेंगे**
**फिर क्या यहां रह जायेगा**
**एक सिसकता आंसुओं का**
**कारवां रह जायेगा।**
**प्यार की धरती**
**अगर बंदूक से बांटी गई**
**एक मुर्दा शहर**
**अपने दरमियां रह जायेगा।**

**–गोपाल दास नीरज**

2024 की शुरूआत असाधारण उतार चढ़ाव से भरी हुई थी, जिसमें एडना ओ ब्रायन, (गर्ल) फ्रांसिन पास्कल) स्वीट बैली हाई सीरीज) एन स्कॉट मोमाडे (हाउस मेड ऑफ डॉन) पद्मश्री से सम्मानित पंजाबी कवि सुरजीत पातर जिनकी प्रमुख रचनाओं में 'हवा विच लिखे (हर्फ,) हनेरे बिच सुलगदी बरनमाला, 'पतझड़ दी पाजेब', 'लफ्जां दी दरगाह' और 'सुरजमीन' शामिल हैं। सुविख्यात अल्बानियाई लेखक इस्माइल कदारे, प्रसिद्ध कश्मीरी कवि पत्रकार साहित्य अकादमी से सम्मानित फारूकी नाजकी, 'द न्यूयार्क ट्रिलाजी' और 'स्मोक' के लेखक पॉल ऑस्टर, जैसे लेखकों को हमने खोया है। यद्यपि ये सभी आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके लिखे शब्द आज भी यह साबित करते दिखाई देते हैं कि किताबें हमें दुनिया बदलने में कैसे मदद् कर सकती हैं किताबें हमें प्रेरित करती हैं, हमें सहानुभूति सिखाकर और हमारे दृष्टिकोण को व्यापक बनाकर। 'उत्तर प्रदेश' परिवार की तरफ से सभी को विनम्र श्रद्धान्जलि!

हमारे अंक आपको कैसे लग रहे हैं। अपनी प्रतिक्रियाओं से अवश्य अवगत कराते रहियेगा भविष्य में हम पाठकों की स्तरीय प्रतिक्रयाओं को भी प्रकाशित करेंगे।

**सम्पादक**

# उत्कृष्ट कवि–कहानीकार भी थे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

❑ शिवराम पाण्डेय

हिंदी साहित्य जगत के आचार्य, रामचन्द्र शुक्ल एक अद्भुत निबंधकार एवं निर्विवाद कुशल समालोचक थे। उनकी कृति के रुप में प्रतिष्ठित चिंतामणि भाग एक एवं भाग दो में संग्रहित उनके दर्जनों निबंध हाईस्कूल से लेकर परास्नातक कक्षाओं तक के विद्यार्थियों को खड़ी बोली के उत्कृष्ट गद्य साहित्य का परिचय कराते हैं। घृणा, ईर्ष्या जैसे छोटे–छोटे शब्दों को आधार बनाकर उनके द्वारा लिखे गये निबंध गंभीर सामाजिक विषयों, मनोभावों एवं मनोविकारों का उत्कृष्ट शब्द–चित्र प्रस्तुत करते हैं। वह एक कुशल शब्द शिल्पी थे। उनका गद्य साहित्य काफी क्लिष्ट एवं संस्कृतनिष्ठ होने के नाते जन सामान्य की समझ से किंचित परे जरूर है मगर साहित्यिक उत्कृष्टता एवं समग्रता की दृष्टि से इसका जवाब नही है। वह सच्चे अर्थों में साहित्याचार्य थे।

काव्य में रहस्यवाद, तुलसी दास एवं सूरदास के साहित्य पर उनके द्वारा लिखी गई समालोचनायें अकाट्य मानी जाती है। आदर्श जीवन, कल्पना के आनन्द, विश्व प्रपंच, शशांक एवं बुद्ध चरित उनके चर्चित अनूदित ग्रंथ है। उनका गद्य साहित्य हिन्दी लेखन का पाठ पढ़ाता हुआ प्रतीत होता है। व्यावसायिक रुप से शिक्षक एवं संपादक होने के कारण उनका साहित्य भी लिखने वालों को मार्गदर्शक एवं शिक्षक सा ही प्रतीत होता है। गद्य साहित्य के चितेरे यदि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के साहित्य का विधिवत अध्ययन कर लें तो उनके लेखन शैली और शब्दावली में स्वयंमेव गुणात्मक परिवर्तन आ जायेगा। उनका गद्य लेखन एवं समालोचना साहित्य, इतना उत्कृष्ट है कि उनके स्वयं के लिखे अन्य साहित्य बरगद के नीचे उगे 'अमोला' जैसा रह गये हैं और साहित्य जगत भी उससे प्रायः अनभिज्ञ सा है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य राम चन्द्र शुक्ल निबंधकार एवं समालोचक के अलावा उत्कृष्ट कवि एवं कहानीकार भी थे। 18 वर्ष की आयु में ही उनकी कविता 'सरस्वती' जैसी साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी बल्कि यूं कहिये कि साहित्य सृजन की शुरुआत ही उन्होंने कविताओं से की थी। जबकि वर्ष 1902 में उनकी कहानी ''ग्यारह वर्ष का समय'' भी सरस्वती में प्रकाशित हुई थी उनकी कवितायें एवं कहानियों में शब्द गुंफन थोड़ा क्लिष्ट ज़रूर है मगर उसमें तत्कालीन सामाजिक स्थिति के बिम्ब एवं मनोभावों का मर्मस्पर्शी चित्रण मिलता है। शब्दों का चयन पाण्डित्यपूर्ण होने के बावजूद भावों को घुटन नहीं

महसूस होती है, मनोभावों एवं वृत्तियों का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहता है। कवि एवं कहानीकार आचार्य शुक्ल ने अपनी इन रचनाओं में पाण्डित्य एवं वैविध्य बनाये रखने के बावजूद अपनी बात स्पष्ट रुप से रखी है। उनकी कविताओं में किंचित छायावाद की झलक जरूर मिलती है किंतु लक्षणा एवं व्यंजना का अधिक सहारा नहीं लिया गया है।

उनकी कविता एवं कहानी के विषय ऐतिहासिक होने के बावजूद श्रृंगार रस को अपने में समाये हुये हैं। वियोग विप्रलंभ श्रृंगार रस भी उनकी रचनाओं में मिलता है। वियोग विप्रलम्भ श्रृंगार का संयोग श्रृंगार में सुखांत उनकी कविताओं,कहानियों की विशेषता है। उनके निबंध एवं समालोचना के साहित्यिक के वट वृक्ष ने शायद उनकी कविता एवं कहानी साहित्य को पनपने का अवसर नहीं दिया जो कि हिंदी साहित्य के साथ एक प्रकार का अन्याय ही है।

उनकी कविता ''शिशिर पथिक'' यानी ठण्ड का बटोही बड़ी ही मार्मिक है। सरस्वती के 1905 के अंक में प्रकाशित यह कविता भाव संवाद पर आधारित है जिसका नायक बाल वय में ही ब्रिटिश सेना में भर्ती हो जाता है। अपनी पत्नी व परिवार को त्याग कर ब्रिटिश हुकूमत के आदेश पर अंग्रेजी फौज के साथ विभिन्न देशें से युद्ध करता है। और अंत में मार काट के धंधे से ऊब कर वह स्वदेष चला आता है। मगर तब तक वह अपने मित्र परिवार एवं पत्नी तथा अपने मूल घर को भूल चुका होता है फिर भी उसके चित्त पर अतीत का एक क्षीण सा बिम्ब अभी भी मौजूद है। उसे अपने गाँव का नाम भी स्मरण है, मगर वह गाँव कहाँ स्थित है यह भी उसे याद नहीं है। खैर जब वह स्वदेश लौटता है तो घनी अंधेरी भीषण ठण्ड़ी रात है, सैनिक शिशिर पथिक इस विकट ठण्ड़ी रात में बिना अपनी मंजिल जाने ठिठुरता हुआ चला जा रहा है। यहाँ पर आचार्य राम चन्द्र शुक्ल का ऋतु वर्णन दृष्टव्य है।

**तनि गये सीत ओस वितानहू**
**अनिल झारबहार धरा परी।**
**लुकन (छिपना) लोग लगे घर बीच है**
**विवर भीतर कीट पतंग से।**

अर्थात ठंड के मौसम है, तेज हवा धरती पर झाडू लगाती हुई बह रही है। जब तेज हवा धरती को स्पर्श करती हुई चलती है नभ में उसका प्रभाव नहीं पड़ता ऐसे ओस खूब पड़ती है इसीलिए कवि कहता है ओस की चादर तनी हुई है। ऐसे में लोग घरों में ठंड के डर से इस प्रकार छिपे बैठे है जैसे विवरों (बिलों व दरारों) में कीट पतंग छिप जाते हैं। शीत ऋतु का यहाँ उन्होंने बड़ा ही वैज्ञानिक एवं स्वाभाविक वर्णन किया है।

नायक चूँकि सैनिक है अतः स्वभावतः दृढ़ संकल्प वाला भी है, ठंड के मारे दोनों हाथ छाती से समेटे हुये हैं फिर भी मन में ठान लेता है कि जब तक कोई पूछेगा नहीं मैं अपनी विपदा किसी को स्वयं नहीं बताऊँगा।

**चुप रहौं तब लौ, जब लौं, कोऊ,**
**सुजन पूछनहार (पूछने वाला) मिलै नहीं**

रात और ठंड बढ़ती जा रही थी पथिक हिम्मत हारकर विश्राम के लिए किसी घर की तलाश में तो था ही, उसे कुछ दूरी पर कुत्तों के भौंकने की अवाज सुनाई पड़ी और धुंआ भी दिखाई दिय। पथिक उम्मीद भरी तेजी से उस घर पर पहुंचा तो दरवाज़े बंद थे, मगर उसके आने की आहट घर के अंदर पहुँच चुकी थी और अंदर से आवाज़ आई—

**सुनि पर्‍यो कौन तुम, कह्‌यो तबै**
**पथिक दीन दया इक चाहतो।**

(दया चाहने वाला एक पथिक)

अंदर आने की इजाज़त पाकर पथिक घर में दाखिल होता है जहाँ एक कोने में पड़ी चारपाई पर जीवन से थका हारा एक वृद्ध लेटा हुआ है। उसकी दुबली पतली दुखित क्षुभित कन्या सिर के पास खड़ी है जो कि जीवन से पूर्णतया निराश प्रतीत होती थी। अतिथि को आश्रय मिल गया था। इसलिए कृतज्ञता का भाव आना स्वाभाविक था उसने कन्या को आर्शीवाद दिया—

**अतिथि बैठि असीस दयो तबै**
**फलवती सिगरी तुअ आस हो।**

ऐसे में दया का पात्र दिख रही हताश निराश युवती ने मंद—मुस्कान के साथ कहा— क्यों निरर्थक आशीष दे रहे हो, कहीं सूखे पेड़ में भी फल लगता है?

**मृदु हंसी करूण—रस संगिनी**

**तरूणि आनन ऊपर धारि के।**
**कहति हाय पथिक सुनु बावरे**
**न तरू नीरस में फल लागई।**

युवती को लोकाचार एवं लोकरीति अच्छी तरह मालूम है। अतः उसने अतिथि का आगे का हाल–चाल जानना जरूरी समझा और पथिक के घर परिवार के बारे में प्रश्न करते हुये कहा देखिये मेरा तो भाग्य ही खराब है। भगवान ने मुझसे सारा सुख छीन लिया है इसलिए मैंने पिता के प्रति अपने कर्तव्यों व अतिथियों की सेवा का व्रत लिया है। अब तुम अपनी बताओ क्या नाम है, कहां से चले आ रहे हो, रास्ते में अधीर होकर चल रहे थे क्या बात है–क्या कोई युवती तुम्हारी बाट जोह रही है? बाट जोहती वियोगिनी की क्या स्थिति होती है कवि के शब्दों में देखिये–

**अखिल आस अमीं रस सींचिके**
**सतत राखति जो तन वेलि ही**
**पथिक! बैठि अरे तुव बाट को।**
**युवति जोवति है कतहू कोऊ**
**नैन कोऊ निरन्तर धावही**
**तुमहि हेरन को, पथ बीच में**
**श्रवण बाट कोऊ रहते खुले**
**कहु अरे तुव आहट लेन को।**
**कहुं कहू तोहि आवत जानि कै**
**निकट ता तुव प्रेम प्रदायिनी**
**प्रथम पावन कारण होत है**
**चरन लोचन बीच बदा बदी।**

विरहणी नायिका प्रश्न के बहाने अपनी पूरी मनोव्यथा पथिक से कह डालती है। पथिक निस्तब्ध किंकर्तव्यविमूढ़ सा उसका चेहरा देखता रह जाता है। कुछ जवाब नहीं दें पाता है। इससे युवती को लगता है कि शायद वह कुछ गलत बोल गई। जरुरी नहीं कि शीत पथिक भी उसकी तरह वियोगी हो और अपनी प्रेयसी से मिलने निकला हो। अतः वह बात को संभलाते हुये कहती है– बुरा मत मानियेगा और इसी बहाने वह अपनी बात स्पष्ट करते हुये कहती है जो लोग अपने दिन दुखों में काट रहे होते हैं उन्हें अपने सिवा संसार का हर व्यक्ति सुखी प्रतीत होता हैं इसके बाद दोनों कुछ क्षण मौन रहते है। मौन तोड़ते हुये पथिक अपना परिचय देता है।

**कहूं यहीं इक मनुमथ गांव हैं**
**जहां घनी बस्ती विधु–वंश की**
**तहं रहे इ विक्रम सिंह जो**
**सुवन तासु यहीं रनवीर है**

अतिथि ने अपना जो परिचय दिया वही तो उसके पति का परिचय था। अपने ससुर की सेवा में लगी युवती उसी की तो अर्धंगिनी थी। अतिथि का परिचय अपने पति के रुप में पाकर युवती आँचल में अपना मुंह छिपाये हुये मारे खुशी के जमीन पर गिर जाती है। शुक्ल जी लिखते हैं–

**कहत ही इन बैनन के तहां**
**मचि गयो कछु औरहि रंग ही**
**बदन अंचल बीच छिपावती**
**गिरि परी भूतल वह भामिनी**

और इस प्रकार सुखांत कथा के माध्यम से वियोग श्रृंगार संयोग श्रृंगार में बदल जाता है। इस एक कविता के माध्यम से आचार्य शुक्ल के मौसम विज्ञान, लोकरीति, नारी स्वभाव एवं ऋतु परम्परा का ज्ञान तथा भाषा, अलंकार रस एवं छंद शास्त्र में विद्वता प्रमाणित हो जाती है।

आचार्य शुक्ल एक कुशल कथाशिल्पी भी थे। यद्यपि उनकी ज्यादा कहानियां पढ़ने को नहीं मिलती है मगर सरस्वती के वर्ष 1902 के एक अंक में प्रकाशित उनकी कहानी (ग्यारह वर्ष का समय) उन्हें एक उत्कृष्ट कहानीकार साबित करने के लिए पर्याप्त है।

कहानी का नायक शिशिर पथिक की भांति अपनी प्रियतमा के विरह में व्याकुल दीन, मलीन, क्लांत एवं शांत एक धीरोदात्त नायक है। जो कि अपनी उस ब्याहता प्रेयसी की तलाश में है जिसके साथ अभी उसका मधुर मिलन भी नहीं हो पाया था। दोनों का ब्याह हुआ था मगर गौना नहीं। बचपन में आई बाढ़–विपत्ति में दोनों बिना मिले ही बिछड़ गये थे, नायक अपनी ब्याहता की तलाश में परेशान तो है मगर उसे उसका कोई भी सुराग मालूम नहीं है। विक्षुब्ध नायक वाराणसी में अपने एक मित्र के साथ रहने लगता है

और एक दिन धूमने निकलता है। घूमते–घूमते दोनों पथ भटक कर एक ऐसे खण्डहर में पहुँच जाते हैं। वहाँ कभी कोई मानव प्राणी आता जाता नहीं था। वहाँ पर एक विचित्र घटना घटती है जो वियोग को, संयोग में बदल कर कहानी को सुखांत बना देती है।

रात हो जाने के कारण मजबूरीवश नायक को उन्हीं खण्डहरों में रुकना पड़ता है। जहाँ पर रात के अंधेरे को चीरते हुये एक जगह में चिराग की रोशनी दिखती है। जिज्ञासावश नायक उस प्रकाश बिंदु तक पहुंचता है। खण्डहर में उसकी, एक शांत, क्लांत और डरी, सहमी एक महिला से मुलाकात होती है। दोनों में परिचय होता है तो पता लगता है कि वह एकांतवासिनी कोई और नहीं बल्कि उसकी ब्याहता ही थी जिसे वह तलाश रहा था। बाढ़ विप्लव में उसका पूरा गाँव विलुप्त हो गया था। बाढ़ के बाद अपने गाँव में वह अकेली बची थी, अपने गाँव के खण्डहरों में ही एकांतवास कर रही थी। उसे विश्वास था कि एक न एक दिन उसको तलाशता हुआ उसका जीवन–साथी उन खण्डहरों में जरुर आयेगा। और उसकी उम्मीद पूरी हुई।

**युवती को लोकाचार एवं लोकरीत अच्छी तरह मालूम है। अतः उसने अतिथि का आगे का हाल–चाल जानना जरूरी समझा और पथिक के घर परिवार के बारे में प्रश्न करते हुये कहा देखिये मेरा तो भाग्य ही खराब है। भगवान ने मुझसे सारा सुख छीन लिया है इसलिए मैंने पिता के प्रति अपने कर्तव्यों व अतिथियों की सेवा का व्रत लिया है। अब तुम अपनी बताओ क्या नाम है, कहां से चले आ रहे हो, रास्ते में अधीर होकर चल रहे थे क्या बात है–क्या कोई युवती तुम्हारी बाट जोह रही है?**

इस कथा को गढ़ने में कहानीकार पंडित राम चन्द्र शुक्ल एक कुशल कथाशिल्पी प्रतीत होते हैं। कथा का देशकाल रचते हुये आचार्य शुक्ल लिखते हैं–

''पावस (ऋतु) की 'जरा' अवस्था थी, इसलिए ऊपर से भी किसी प्रकार के अत्याचार की संभावना न थी।

अहा ऋतुओं में उदारता का अभिमान यही कर सकता है। दीन कृषकों को अन्नदान और सूर्याताप तप्त पृथ्वी को वस्त्रदान देकर यश का भागी यही होता है। इसे तो कवियों के कौशल से राय बहादुर की उपाधि मिलनी चाहियें। यद्यपि पावस की युवावस्था का समय नहीं है किन्तु उसकी यश की ध्वजा फहरा रही है''।

कहानी वर्णनात्मक शैली में है, कहानी को आगे बढ़ाने के संवाद एवं कथोपकथन का सहारा नहीं लिया गया है। इस बात का एहसास शायद आचार्य शुक्ल को भी था तभी तो वह लिखते हैं–

हमारे कतिपय पाठक हम पर दोषारोपण करेंगे कि–है, न कभी साक्षात हुआ, न वार्तालाप हुआ, न लम्बी –लम्बी 'कोर्टशिप' हुई यह प्रेम कैसा?

''महाशय रूष्ट न होइये इस अदृश्य प्रेम का धर्म और कर्तव्य से घनिष्ट संबंध है। इसकी उत्पत्ति केवल निःस्वार्थ हृदय में ही हो सकती है। इसकी जड़, संसार के और प्रकार के प्रचलित प्रेमों से दृढ़तर और अधिक प्रशस्त है।''

आचार्य शुक्ल की कहानी कला पर उनका निबंधकार हावी है जिसका एहसास आप ऊपर वर्णित पंक्तियों में स्वयं कर सकते हैं। किस प्रकार वह प्रेम की परिभाषा एवं व्याख्या करने लगते हैं उनकी कहानी में भी यदा कदा छायावाद का दर्शन हो जाता है यथा–

''इतने में चारूहासिनी चंद्रिका अट्टहास करके खिलखिला पड़ी''

आचार्य शुक्ल पर पाश्चात्य साहित्य का किंचित भी प्रभाव नहीं था, कथाओं का सुखद अंत उन्हें अभीष्ट था। अतः इस कहानी में भी नायक भटकते हुये जिस खण्डहर में पहुँचा उसी खंडहर में उसकी ब्याहता अज्ञातवास कर रहीं थी। यदा कदा किसी ने उसे देखा भी तो आस पास के क्षेत्र में प्रचालित जनश्रुतियों में उसे चुड़ैल माना गया। चुड़ैल के रूप में वह लोगों को भयाक्रांत करती थी। संयोग से इसी खण्डहर में नायक और नायिका का मिलाप परिचय एवं प्रथम समागम होता है और ग्यारह वर्ष पुरानी बाढ़ विपदा की त्रासदी हर्षातिरेक में तिरोहित हो जाती है। ◆

**पता : ई–3695 राजाजीपुरम, लखनऊ 226017**

**मो. : 9415757822**

# प्राकृतिक सौन्दर्य का खज़ाना : भूटान

❑ पारूल बंसल

भारत का पड़ोसी देश भूटान का नाम आते ही मन पर वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता से सराबोर छवि अंकित हो गई। यह सात दिवसीय यात्रा की योजना थी, जिसके लिए हमने दिल्ली से बागडोगरा तक स्पाइसजेट की फ्लाइट में सफर किया, जो लगभग पौने दो घंटे में पहुंच गई। फिर वहाँ से टैक्सी लेकर हम फुंतशोलिंग के लिए रवाना हुए। जहाँ हम दोपहर 1:00 बजे 4 घंटे का सफर तय कर पहुँच गए। यह भूटान और भारत का बॉर्डर है, जिसे भारत में जयगांव और भूटान में फुंतशोलिंग के नाम से जानते हैं। जयगांव का जनजीवन और प्राकृतिक सौंदर्य फुंतशोलिंग से बिल्कुल अलग था। देखा जाए तो सिर्फ एक दीवार के दूसरी ओर बिल्कुल अलग वातावरण था। इमीग्रेशन चौक होने के बाद ही हम लोग भीतर प्रवेश कर सके। जैसे ही भूटान की धरती पर कदम रखा, वहाँ बादलों ने हमसे हाथ मिलाकर हमारा स्वागत किया और हमारे इर्द–गिर्द वहीं मंडराने लगे। मानो हमारे गाइड बनना चाहते हों। पूरे 10 –12 घंटे के सफर की थकान वहाँ की सुंदरता के आगे काफूर हो गई। होटल 'पाम' जैसे ही हम पहुँचे .. वहाँ का स्टाफ जो भूटानी ड्रेस में था, हमारे स्वागत के लिए पलकें बिछाए खड़ा था। भूटान में बूमथांग भाषा बोली जाती है, किंतु 75 प्रतिशत रहने वाले भूटानी लोग हिंदी भाषा बखूबी समझते भी हैं और बोल भी सकते हैं, ज्यादातर बौद्ध धर्म के अनुयाई हैं। 25% हिंदू भी वहॉं रहते हैं। वेलकम ड्रिंक और सभी के चेहरों पर सजी प्यारी सी मुस्कान ने हमारी रही सही थकान भी दूर कर दी। हमारा गाइड जिसका नाम 'चोकी' था, वह रिसेप्शन पर मौजूद था, जिसने हमें लंच के बाद शाम को फुंतशोलिंग का सस्पेंशन ब्रिज और मार्केट दिखाने के लिए रेडी रहने को कहा, सो समयानुसार लोकल टैक्सी से हम ब्रिज देखने निकले। कार में हमने एसी नहीं चलाया क्योंकि बाहर का मौसम बहुत ही खुशनुमा था। ठंडी हवा हर रोम रोम में सुरसुरी जगा रही थी और बादल तो हमारा पीछा ही नहीं छोड़ रहे थे। लोहे से बना सस्पेंशन ब्रिज जो हैंगिंग था, करीब 500 मीटर लंबा, हजारों फीट नीचे नदी बह रही थी, जिसकी तेज आवाज रोमांच पैदा कर रही थी। हमारा सात लोगों का ग्रुप था। ब्रिज थोड़ा हिल रहा था पर यकीन मानिए ब्रिज के

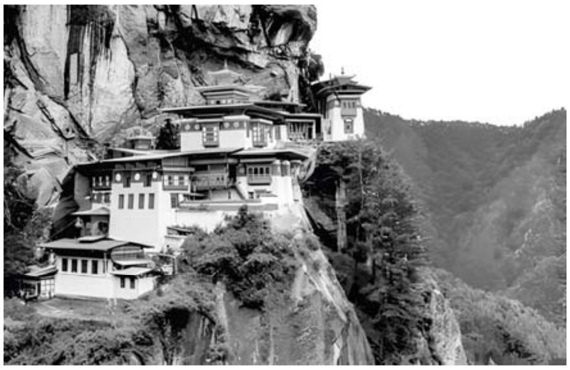

बीचों बीच खड़े होने पर देखा कि नदी की लहरें ऊपर तक उछाल मार रही थीं, मानो हमसे गपियाना चाह रही हो और किनारों पर लगे पेड़ नदी की ओर झुकते ही जा रहे थे, मानो ये आलिंगन की आस लिए हों। कुछ फोटोग्राफी करने के बाद वहाँ से हम लोग मार्केट के लिए रवाना हुए। कुछ चढ़ाई कुछ उतराई वाला बाजार था। वहाँ भूटान के ट्रेडिशनल आइटम थोड़े बहुत दुकानों पर मौजूद थे। अगले दिन हमें थिंपू, जो की भूटान की राजधानी भी है वहां के लिए निकलना था। जिसके लिए हमारे पास टोयोटा की 10 सीटर haice कार थी।

थिंपू के रास्ते में एक जगह लैंडस्लाइड हो चुका था, जो काफी बड़ा पत्थर था और पिछली रात से पड़ा हुआ था। जिसे हटाने अभी तक कोई रेस्क्यू टीम नहीं आई थी। गाइड और ड्राइवर ने बताया यहाँ कच्चे पहाड़ होने के कारण ऐसा आए दिन होता रहता है। वहाँ रोडसाइड जंगल में भी किसी को टॉयलेट जाने, कूड़ा फेंकने और स्मोक करने की परमिशन नहीं थी। थिंपू जो कि भूटान की राजधानी है, वहाँ तक का पूरा सफर इतना मनोहारी था कि एक पल के लिए भी आंखें मूंदकर हम उन सुंदर दृश्यों का अपमान नहीं करना चाहते थे। भूटान और भारत के समय में 30 मिनट का अंतर है। भूटान का आधा घंटे आगे है। रास्ते में जगह–जगह छोटी–छोटी स्ट्रॉबेरी रोड साइड ही उग रही थीं, जो बारिश के पानी से धुलकर और भी चमकदार लग रही थीं। वहीं एक फल विक्रेता से हमने आड़ू और आलू बुखारा भी खरीदा जो कि भारत से काफी सस्ता था। वैसे भूटान घूमना थोड़ा महंगा तो है, क्योंकि वहाँ प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के हिसाब से ₹1200 टैक्स देना होता है, गाइड जो कि प्रतिदिन ₹1500 चार्ज करता है, वह सभी को रखना कंपलसरी है। एक ₹800 प्रति व्यक्ति पूरी यात्रा का बीमा शुल्क भी वहन करना पड़ता है। सड़क मार्ग से भूटान जाने के लिए भारतीय नागरिकों को पासपोर्ट/वीजा लेने की जरूरत नहीं पड़ती। इसके लिए भूटान के फुंतशोलिंग से आपको परमिट लेना पड़ता है। वहाँ डाक्यूमेंटशन के लिए आपको आइडी प्रूफ दिखाना होता है। इसके आधार पर भूटान का इमिग्रेशन डिपार्टमेंट परमिट जारी कर देता है। भारतीय रुपये और भूटानी नगुल्टम की वैल्यू एक बराबर है, यानि ₹1 रुपया एक भूटानी नगुल्टम के बराबर है। जून 2023 में भारत और भूटान में सोने की प्रति 10 ग्राम कीमत में 17000 रुपए का अंतर था जो भूटान में कम था। भूटान ऐसा देश है जहाँ आप बिना पासपोर्ट और वीजा के हवाई जहाज से भी सफर कर सकते हैं। सिर्फ आपके पास वोटर आईडी और जो 18 वर्ष से कम है उनका बर्थ सर्टिफिकेट इंग्लिश में होना जरूरी है। भूटान में सूरज जल्दी उगता है। सुबह 5 बजे ही इतनी रोशनी होती है कि मानो भारत के 7 बजे हों ।थिंपू के बाजार का पूरा रास्ता एक साइड पहाड़, एक साइड बसावट थी। होटल प्रतपीं में जैसे ही पहुँचे, वहाँ के स्टाफ ने हमें ग्रीन टी वेलकम ड्रिंक सर्वे किया।

यकीन मानिए इतनी टेस्टी ग्रीन टी हमने पहले कभी नहीं पी। हर बार कड़वे स्वाद के कारण छोड़ देते थे। भूटान में स्त्री पुरुष अनुपात 1:5 है, इसीलिए वहाँ के ज्यादातर होटल, दुकान महिलाएं संभालती हैं। यहाँ तक कि कार से लगेज अनलोड करना भी .....यह हमारे लिए काफी हैरत में डालने वाला था। एक चीज और मैंने वहाँ नोटिस की, कि वहाँ का आदमी खुश मिजाज़ है।

**भारत का पड़ोसी देश भूटान का नाम आते ही मन पर वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता से सराबोर छवि अंकित हो गई। यह सात दिवसीय यात्रा की योजना थी, जिसके लिए हमने दिल्ली से बागडोगरा तक स्पाइसजेट की फ्लाइट में सफर किया, जो लगभग पौने दो घंटे में पहुंच गई। फिर वहाँ से टैक्सी लेकर हम फुंतशोलिंग के लिए रवाना हुए। जहाँ हम दोपहर 1:00 बजे 4 घंटे का सफर तय कर पहुँच गए। यह भूटान और भारत का बॉर्डर है, जिसे भारत में जयगांव और भूटान में फुंतशोलिंग के नाम से जानते हैं। जयगांव का जनजीवन और प्राकृतिक सौंदर्य फुंतशोलिंग से बिल्कुल अलग था। देखा जाए तो सिर्फ एक दीवार के दूसरी ओर बिल्कुल अलग वातावरण था। इमीग्रेशन चौक होने के बाद ही हम लोग भीतर प्रवेश कर सके। जैसे ही भूटान की धरती पर कदम रखा, वहाँ बादलों ने हमसे हाथ मिलाकर हमारा स्वागत किया और हमारे इर्द–गिर्द वहाँ मंडराने लगे।**

हर बात पर मुस्कुराता है। जो पैसा है जितना है, वह उसमें खुश है। वहाँ पर आज भी राजा का शासन है और उनकी पांचवीं पीढ़ी राज्य कर रही है। भूटान के वर्तमान राजा जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक हैं। 9 दिसंबर, 2006 को जिग्मे खेसर नामग्येल वांगचुक भूटान के राजा बने और उन्हें ''ड्रैगन किंग'' के रूप में जाना जाता है। भूटान की जनता राजा को ईश्वर के बराबर ही दर्जा देती है। जिसका प्रमाण हमें इस बात से मिला कि वहाँ की हर मॉनेस्ट्री, सरकारी कार्यालय, होटल, पब्लिक प्लेस और टैक्सी ही नहीं, बल्कि सभी टूर गाइड और ड्राइवर राजा की तस्वीर सपत्नी सहित वाला बैज लगाए रहते थे।

पुरुषों का पहनावा जिसे गो हीव कहते हैं, साथ में काले या कत्थई घुटनों तक लंबे मोजे और काले जूते, पैंट नहीं पहनते। महिलाएं Kira n tego पहनती हैं, जो यहाँ की परंपरागत पोशाक है। हमने भी वहाँ की वेशभूषा में तस्वीर खिंचवाई। थिंपू में कमरों में ऐसी नहीं था बल्कि हीटर लगे हुए थे। लेकिन जून के महीने में सुबह ही हल्का हीटर चलाने की आवश्यकता महसूस हुई। जिरिखा होटल की शेफ ने हमें बड़े प्यार से रात का खाना भरोसा। हम सात लोगों का डिनर उन्होंने हमारे स्वादानुसार उत्तर भारतीय तरीके से डाइनिंग टेबल पर सजा रखा था। सुबह हम tashichho dzong fort और म्यूजियम देखने निकले, दोनों ही जगह काफी सीढ़ियाँ थीं, हम मॉनेस्ट्री भी गए जहाँ प्रवेश करने से पहले गाइड का सख्त निर्देश होता था कि 'कीप साइलेंस इनसाइड'। वहाँ सभी मोनेस्ट्री में बुद्ध की प्रतिमा के आगे करीब 8–10 कटोरों में शुद्ध जल भरा होता था। पूछने पर पता लगा कि यह जल प्रतिदिन बदला जाता है। इसका प्रयोग हमें लगा प्रसादी के तौर पर होता होगा, किंतु उन्होंने बताया कि यह जल पौधों में अर्पित किया जाता है। शायद इसलिए वहॉ हरियाली कुछ अलग ही प्रकार की थी और बहुतायात में भी थी। मोनेस्ट्री में बटर लैंप प्रसाद के तौर पर बनाकर चढ़ाया जाता है। जिसे बनते हुए देखना बहुत ही रोचक था। वे ताजा मक्खन में ईटेबल कलर मिलाकर चाकू और उंगलियों की सहायता से बड़े ही खूबसूरत बटर लैंप बना रहे थे। मॉनेस्ट्री के अंदर फोटोग्राफी सख़्त मना थी। सो मैं तस्वीर ना ले सकी। मैंने पूछा बाद में इन लैंप का क्या प्रयोग होता है, तो पता चला कि खाने के लिए प्रसाद के तौर पर बॉट दिए जाते हैं। परंतु हमें यह प्रसाद उस वक्त प्राप्त नहीं हुआ। मोनेस्ट्री में इतनी शांति थी कि मन कर रहा था यहीं पर कुछ घंटे मैडिटेशन किया जाए। भूटान में सूखा चीज मेड बाय कॉउ मिल्क, जिसके क्यूब्स की माला बनकर बिक रही थी। याक के दूध का भी चीज वहाँ हमने देखा। जो कुछ ग्रे से कलर का था। हो सकता है जो सड़क किनारे बिकने से धूल मिट्टी लगने के कारण ऐसे रंग का हो गया हो। ema datshi, kewa datshi वहाँ के प्रमुख व्यंजन है।

datshi चीज को कहते हैं, ema मिर्च को और kewa आलू को कहते हैं। वहाँ के ज्यादातर व्यंजनों में चीज डलता ही है। स्टेप्स फार्मिंग वहाँ बहुतायात में होती है और वहाँ के आलू का स्वाद भी बहुत बढ़िया है। स्टेप्स फार्मिंग में ज्यादातर चावल की खेती होती है। अगले दिन हम लोग रास्ते में पड़ने वाले सुंदर–सुंदर छोटे–छोटे झरने देखते हुए पुनाखा के लिए रवाना हुए। थिंपू से पूनाखा का सफर और भी रोमांचक लग रहा था। कार के शीशे उतार कर हम ठंडी हवा का लुत्फ उठा रहे थे। पहाड़ी हवा की महक सांसों में घुल रही थी। ठंडी हवा से रोंगटे भी खड़े हो रहे थे। पर ठंडक सहन करने लायक थी। किसी गर्म कपड़े को पहनने की जरूरत महसूस नहीं हो रही थी। थिंपू से पूनाखा की दूरी लगभग 73 किलोमीटर थी। रास्ते में वही बादलों की अठखेलियाँ और हरियाली से लबालब रास्ता और पहाड़ देख–देखकर भी मन नहीं भर रहा था। थिंपू में हमने एक मोनेस्ट्री इनककीं dordenma जहाँ बुद्ध की 1,25,000 प्रतिमाएं लगी हुई थीं।

फिर हम लोग डो चूला पास घूमने गए, जहाँ national memorial chorten monument था, जहाँ 108 भूटानी सैनिकों की याद में 108 स्मारक बने हुए थे। हम दोपहर को पुनाखा के होटल लोबेसा पहुँच गए। बाहर से साधारण से भी कम दिखने वाला होटल अंदर पहुँचकर कुछ

और ही था। पूरी तरह लकड़ी के बने हुए कमरे और आगे बहुत बड़ी टेरेस, जहाँ से पूरा का पूरा पुनाखा पलक झपकते ही देखा जा सकता था। तुरंत ही गाइड के निर्देशानुसार हम पूरी बाँहों के कपड़े पहनकर किंग फोर्ट, kuensel phodrang (Buddha statue) देखने के लिए निकल गए, क्योंकि वहाँ स्त्रियों को पूरी तरह शरीर ढके हुए वस्त्र पहनकर जाने पर ही अनुमति थी। पुनाखा में भी सस्पेंशन ब्रिज था। पुनाखा में हल्की बारिश ने मौसम को और भी रुमानी बना दिया। यहॉ होटल के रूफटॉप पर हमने ड्रिंक, म्यूजिक के साथ डिनर का आनंद उठाया। Dzong का नाम Druk Pungthang Dechen Phodrang (Palace Of Great Happiness) रखा गया। पूनाखा में सर्दियों में श्रम–Khenpo और King Jigme Dorji Wangchuck ने पहले राष्ट्रीय असेंबली 1952 में की।

उसके बाद हम लोग Chhimi Lhakhang मंदिर देखने गए जो "The Temple of Fertility" की विशेषता के लिए भी जाना जाता है जो Lama Drukpa Kuenley, "The Devine Mad Man" द्वारा बनवाया गया।

फिर हम अगले दिन 114 किलोमीटर का सफर तयकर पारो के लिए रवाना हुए, जो इस ट्रिप का सबसे शानदार शहर भी था। यहाँ पहुंचने में हमें लगभग चार से पांच घंटे का सफर तय करना पड़ा। हम kitchu monestry घूमने गए। पारो में अगले दिन हमें तक्त्संग मॉनेस्ट्री या टाइगर्स नेस्ट मॉनेस्ट्री जाना था, यह तेरह टाइगर नेस्ट में से एक था। जो भूटान में ऊपरी पारो घाटी की चट्टान पर स्थित है। यह समुद्र तल से 3120 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और पारो घाटी से 900 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इसे देखने वाला हर कोई व्यक्ति संशय में पड़ जाएगा कि इतनी ऊंचाई पर जाकर इस मॉनेस्ट्री का निर्माण किस प्रकार किया गया होगा।

जहाँ का ट्रैक लगभग 7 से 10 किलोमीटर का था। यह ट्रैक अपने आप में चुनौती भरा था। कभी चढाई कभी उतराई, कभी पक्की सीढ़ियाँ कभी कच्ची सीढ़ीयाँ और पूरे रास्ते एक तरफ खाई और एक तरफ पहाड़ थे। रास्ते में बार–बार कई जगह खूबसूरत झरने भी थकान को मिटाने में कारगर सिद्ध हो रहे थे। टाइगर नेस्ट तक पहुँचने का सारा रास्ता मनोरम दृश्यों से भरा था। वहाँ की हवा में एक तरह की शांति खुली हुई थी। चढ़ने के साथ–साथ कोई भी थकान, तनाव कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था और ऊपर पहुँचकर मोनेस्ट्री में जो एक भीतर तक आत्मा को संतृप्त कर देने वाला अनुभव हमने महसूस किया, उसे शब्दों में बयां कर पाना शायद मुश्किल ही है। इसके बाद हम लोग अगले दिन फुंतशोलिंग के लिए रवाना हुए, जहाँ के लिए निकलने से पहले हमने पारो एयरपोर्ट व्यू देखा। पारो अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का निर्माण 1960 के दशक के अंत में भूटान की शाही सरकार की ओर से भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा ऑन–कॉल हेलीकॉप्टर संचालन के लिए हवाई पट्टी के रूप में किया गया था। देश की पहली एयरलाइन, ड्रुकेयर, 1981 में ही स्थापित हुई थी। दुनिया भर के केवल 24 पायलटों को ही इसके चुनौतीपूर्ण रनवे पर उतरने की अनुमति होने के कारण, पारो हवाई अड्डा लुभावनी प्राकृतिक सुंदरता और तकनीकी जटिलता का एक अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करता है। कहा जाता है कि पारो का एयरपोर्ट विश्व के चुनौती भरे विमान क्षेत्रों में से एक है।सबसे खतरनाक एयरपोर्ट है और वहाँ दिन ढलने की बाद कोई भी फ्लाइट लैंड नहीं करती है क्योंकि एयरपोर्ट के दूसरी ओर खाई है और एयरपोर्ट चारों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ है। फिर हम लोकल मार्केट भी गए जहॉ पर ड्रैगन प्रिंट के कपड़े, क्रोकरी, घर में सजावट के समान बहुतायात में मिल रहे थे। यादगार के तौर पर वहाँ से कुछ सामान हमने भी खरीदा। वहाँ से वापसी के समय भी उन सुंदर नजारों को दिल के कोने में जगह देने से हम स्वयं को नहीं रोक पा रहे थे। ◆

**पता : मो. जय–जय राम, कासगंज–207123**
**मो. : 8273588382**

# पहली बार

❑ नाज़िश अंसारी

अप्रैल की ढलती तपती दोपहर में ऑटो जाम में फंसा था। एक तो जब–जब अम्मा घर जल्दी लौटने की ताकीद करती, इस कम्बख्त जाम को तभी मेरे सब्र का इम्तेहान लेना होता। कोई और दिन होता तो मैं दाएँ बाएँ देख लेती। किसी चारपहिया वाले को जरा घूर लेती। फिर जोर से सुनाते हुए कहती, ''जिस सड़क पे पैदल भी चलना दुश्वार हो..वहाँ लोग पता नहीं क्यों कार ले आते हैं।''

लेकिन आज.. आज तबीयत खामोश रहने की थी। सड़क से उठ रहे हर तरफ के शोर से बेजार मैं ऑटो की दीवार से सर टिका कर चुपदृचाप बैठी थी। मुझे याद आ रही थी किसी इतवार की एक दोपहर। वो घर के सबसे पीछे वाले हिस्से के कोने में रखा अम्मा का टीन का बक्सा था। जब उम्र ने जवानी की दहलीज पे चुपके से क़दम रखा था। अम्मा ने तमाम पुराने तह लगाकर रक्खे दुपट्टों में से अपनी शादी का सुर्ख दुपट्टा निकाला ही था कि ''वॉव अम्मा कितना खूबसूरत है यह..'' कहते हुए मैंने उनके हाथों से दुपट्टा झपट लिया। उसपे बने सलमा सितारे के काम को अंगुलियों से सहलाया। फिर कंधे के दोनों तरफ लपेटकर आईने में खुद को निहारने लगी। उस वक्त अम्मा बड़ी हसरत से तक रही थी मुझे। देखते–देखते उनकी आँखों के कोर भीगने लगे। पलकों को मलते हुए मुस्कुरा कर बोलीं, 'नानी ने अपना दुपट्टा हमें दिया था। तुमाई शादी पे हम तुम्हें दे देंगे।''

''क्या अम्मा! एक जोड़े के लिए मुझे शादी वादी नई करनी।'' कहते हुए मैंने झट से दुपट्टा उतार दिया। जैसे वह कोई दुपट्टा नहीं आज़ादी को निगल जाने का सामान हो। ''अभी तो ग्रेजुएशन पूरा हुआ है! उसके बाद मुझे मास्टर्स करना है। फिर....''

''यह ख़याली पुलाव पकाना छोड़ो बीबी!'' अचानक मेरी बात काटकर अम्मा हाथों को हवा में हिलाते हुए चटक कर बोलीं– जितना पढ़ा, उतना बहुत है। बाकी ससुराल में पढ़ लेना।'' दुपट्टे में तह लगाते हुए उन्होंने इत्तेला दी, ''खाला अपनी ननद को भेजने का कह रही हैं। बता रही थीं, उनका एक ही बेटा है। अच्छे खानदानी, रईस लोग हैं। जोया के लिए अच्छा रहेगा।''

उनकी माने तो पैसे वाले घर में शादी होने से ज़िंदगी की तमाम मुश्किलें हल हो जाती हैं। सो, मेरी पसंद–नापसंद का ख़याल किये बगैर मेरे लिए हेयर बैंड, क्लिप, फ्रॉकें पसंद करने वाली अम्मा ने बिना मेरी मर्जी लिए लड़का भी लगभग चुन ही लिया था। हमेशा की तरह अपनी पसंद में सौ खूबियाँ बता कर मेरी पसंद को रद्द करना उन्हें खूब आता था।

मुझे अच्छी तरह याद है, मेरी उम्र कोई 13, 14 साल रही होगी, जब अम्मा ने स्लीवलेस कुर्ता यह कहकर सिलवाने से मना कर दिया कि ''ऐसे फूहड़ कपड़े शौहर के सामने पहनना!'' नौवीं जमात की अनगढ़ उम्र में साइंस स्ट्रीम लेनी चाही। तब यह कहकर रोक दिया कि माहौल अच्छा नहीं आजकल का। यहीं पास वाले कॉलेज में जो है, वही पढ़ो।

उस वक़्त हमेशा की तरह अब्बा ने मसला हल करने की नीयत से मुझे स्कूल छोड़ने–लाने की बात रखी। लेकिन वह ठहरीं अम्मा! सस्ती नौकरी का ताना देकर अब्बा को याद दिलाने लगीं कि ''सुबह से शाम तक की चाकरी और आए दिन किये जाने वाले ओवरटाइम के साथ यह मुमकिन नहीं है।'' मैनें मन मार लिया। अब्बा चुप हो गए। जैसे चुप हो जाते थे अमूमन। इन वक्तों में जब अब्बा, अम्मा के तानों से खामोश होते, मैं उनके लिए चाय ले जाती। हम मिल के पीते। खबरें देखते। और बिना लफ़्ज़ों के, आँखों ही आँखों में एक दूसरे को ''इट्स ओके'' कहते।

**ये वही दौर था जब अब्बा के साथ खबरें देखने की ऐसी आदत लगी कि मुझे ब्रेकिंग न्यूज याद रहने लगी थी। नेताओं के स्टेटमेंट भी। जिस उम्र में लड़कियाँ कॉपी पे मेहंदी के डिजाइन बना कर अपनी फुर्सतें काट रही थीं, मैं प्राइम टाइम और डिबेट देखने में बिता रही थी। दिन भर अम्मा की चोरी से आईने के सामने न्यूज एंकर बनी फिरती थी। मैंने गूगल से पूछ रखा था कि न्यूज एंकर बनने के लिए क्या पढ़ना होगा। किस कॉलेज में एडमिशन के लिए कितनी फीस लगेगी। कहाँ स्कॉलरशिप मिल सकती है वगैरह वगैरह।**

ये वही दौर था जब अब्बा के साथ खबरें देखने की ऐसी आदत लगी कि मुझे ब्रेकिंग न्यूज याद रहने लगी थी। नेताओं के स्टेटमेंट भी। जिस उम्र में लड़कियाँ कॉपी पे मेहंदी के डिजाइन बना कर अपनी फुर्सतें काट रही थीं, मैं प्राइम टाइम और डिबेट देखने में बिता रही थी। दिन भर अम्मा की चोरी से आईने के सामने न्यूज एंकर बनी फिरती थी। मैंने गूगल से पूछ रखा था कि न्यूज एंकर बनने के लिए क्या पढ़ना होगा। किस कॉलेज में एडमिशन के लिए कितनी फीस लगेगी। कहाँ स्कॉलरशिप मिल सकती है वगैरह वगैरह।

हालांकि जानती थी कि अम्मा को पता चल गया तो समाज और मज़हब के रवायती रोलर को मेरे जर्नलिस्ट बनने के सपने पर चढ़ा देंगी। और वही पुराना तकिया कलाम दोहराएंगी, ''जो करना, ब्याह के बाद करना।'' हुन्ह..ब्याह न हो गया, जी का जंजाल हो गया। अगर लाल जोड़े के बाद ही फॉर्मल कोट पैंट पहनना नसीब होगा तो यही सही। पता नहीं क्यों मुझे उम्मीद थी कि निकाह के बाद यह इंतजार के बादल छँट जाएगें।

दिल का क्या है, ख्वाब सजा लेता है। उनको पूरा करने में जी जान से लग जाता है। लेकिन रास्ते में मिलने वाले स्पीड ब्रेकर के बारे में कभी नहीं सोचता। ये तो बस चल पड़ता है। जैसे घंटे भर के जाम के बाद मेरा ऑटो अब चला था। ठीक तभी मोबाइल वाइब्रेट हुआ। स्क्रीन पर एक नाम उभरा। पढ़ा मैंने। लगातार पढ़ती रही। फोन कट गया। मेरे अंदर से एक गहरी साँस आई और वापस चली गयी।

कॉल अमान की थी। आप सोच रहे होंगे, ये कौन है। हाँ, तो यह कस्सा भी सुन लीजिये। वह और मैं एक ही कॉलेज से थे। मैं ग्रेजुएशन के आखिरी सेमेस्टर में थी। अमान मास्टर्स पास आउट कर नेट क्लीयर करने की कोशिश में था। वो क्या डायलॉग था किसी फिल्म में कि ''मौत और मुहब्बत देख कर नहीं आते।'' हाँ, बस कुछ ऐसा ही मामला यहाँ भी था। कब, कैसे, किस वक़्त, किस लम्हा दोनों इश्क की नाव में सवार हुए, ठीक ठीक बताया नहीं जा सकता। अमान का कहना था, कॉलेज की इसी कैंटीन में जिस लम्हा वह टकराई, बिना डरे आँखें दिखाई, दो बातें सुनाई, बस वहीं की थी इश्क ने पहली कमाई।

मुझे लगता, अमान ने जिस तरह बार–बार माफी मांगी और किया चुपचाप इंतज़ार, शायद इसी अदा से हुआ

था मुझे उससे प्यार। फिर? फिर क्या! कभी इस पेड़ के नीचे, कभी उस चबूतरे के ऊपर मिलना। कुछ कहना, कुछ रहने देना। बहुत से मैसेजेस, और फोन पर घंटों बतियाना।

अमान मेरी ज़िंदगी की डायरी बनने लगा। और क्यों न बनता, वह पहला शख्स था जिससे घर के किस्सों से लेकर अपकमिंग फ्यूचर की बातें डिस्कस हो रहीं थीं। जैसे अब्बा ने आज क्या कहा। अम्मा ने क्या पकाया। अब्बा और मेरा साथ खबरें देखना। सियासत डिस्कस करना और सबसे ज्यादा जिंदगी में कुछ बनने की चाह की ख्वाहिश को मैंने उससे बार बार कहा। इन सबके बीच इस साथ, लगाव और उससे जुड़े हर जज़्बे को मैंने अबसे पहले कभी महसूस नहीं किया था। एक अजीब सा था वह एहसास।

जैसे आँखों में काजल भरते हुए मुझे अमान की बातें याद आतीं। वह कहता, जोया! तुम्हारी आँखें दुनिया की सबसे खूबसूरत आँखें हैं। मैं मुस्कुराती। वो पलटकर पूछता, जानती हो क्यों.. क्यूं? क्योंकि यह सपने देखती हैं। और यकीं करो मेरा अपनी पहचान बनाने के तुम्हारे इस सपने में मैं हर तरह तुम्हारे साथ रहूँगा।'' ''इसमें मुश्किलें बहुत है लेकिन'' मैं कहती तो अमान मुस्कुरा कर कहता, ''फिक्र नहीं, हम मिलकर मुश्किलों का सामना करेंगे।'' एक सुकून उतर आता था यह सुनकर। लेकिन आजकल हर वक़्त बेचैनी तारी रहने लगी थी। अम्मा हर रिश्तेदार से ''कहीं अच्छा रिश्ता होगा तो बताइयेगा'' कहने लगी थीं। उनकी सोच के मेयार पर न उतरने पर रिजेक्ट भी कर रही थी। लेकिन कब तक??

इसी बीच एक दिन शायद मुनासिब लोग मिल भी गए। कुछ लोगों का घर आना तय हुआ था। डर, घबराहट, बेचैनी में क्या ज्यादा महसूस हो रहा था, क्या कम कहा नहीं जा सकता। मैंने फोन स्वाइप किया। कॉल लगाई। हेलो!! अमान !! तुमने मेरे बारे में घर पर बात की? मेरी आवाज़ भर्रा कर फोन में फैल गयी। जोया? क्या हुआ? सब ठीक है न? उधर से अमान ने हड़बड़ा कर पूछा तो मैंने रुँआसी आवाज़ में सारी बात बता दी।

इट्स ओ++के..लहज़े में इत्मीनान रखते हुए उसने समझाया, लोग सिर्फ देखने आ रहे हैं। निकाह तो नहीं हो रहा न.. ईट टेक्स टाइम. मैं बात करता हूँ घर पर आज ही। एंड यू डोंट वरी एट ऑल .. ओके ! दूसरे दिन उसने मुझे कैफे डे में मिलने के लिए बुलाया। थोड़ी देर में मेरी पसंद की दो ग्लास कोल्ड कॉफी हाजिर थी। हैंडसम तो वो हमेशा ही लगता था। आज रिम वाले स्पेक्स के साथ ब्लैक टी शर्ट और डेनिम जींस में वो बहुत सेंसिबल लग रहा था। बोलने में कभी पहल न करने वाले अमान ने आज बात खुद शुरू की। 'कभी नहीं सोचा था इस तरह तुम्हारे बारे में घर पर बताना पड़ेगा। मैं बहुत पहले बताना चाहता था लेकिन एक्चुअली बड़ी बहन के होते हुए अपनी शादी के बारे में बात करना अच्छा नहीं लगता.. यू नो.. कहते हुए उसकी आंखें मेरे चेहरे पर जम गईं।

ह्म्म्म.. कोल्ड कॉफी में चम्मच हिलाते हुए मैं सिर्फ इतना ही कह सकी थी। जॉब हो जाती तो तुम्हारे मां बाप के सामने कॉन्फिडेंस से जा पाता। उन्हें भी इतमीनान रहता कि मैं तुम्हारी जिम्मेदारी अच्छी तरह उठा सकता हूँ। मेरे पहले से उलझे दिमाग ने एक नई उलझन का सामना किया। मैंने खीझते हुए कहा, अब इसमें जिम्मेदारी वाली बात बीच में कहां से आ गई ! जर्नलिस्ट के लिए दिया गया मेरा इंटरव्यू अच्छा गया था। मुझे यकीन है, कॉल लेटर भी आ जाएगा। शादी के बाद मैं जॉब करूँगी। हम मिल कर एक दूसरे की जिम्मेदारी उठाएंगे यार..'' इतना सुनते ही उसके चेहरे पर नये किस्म के तास्सुरात उभरे। उसने नजरें चुराई। गला साफ किया। बोला, ''जोया वो.. मैं घरवालों को सिर्फ तुमसे शादी पे राजी कर पाया हूँ। अम्मी अब्बू तुम्हारी नौकरी के लिए राजी नहीं होंगे। वो जरा पुराने ख़यालों के हैं तो बहुओं का घर से बाहर जाना, नौकरी करना.. यू नो..

यह सुनते ही मुझे लगा जैसे सिर के पिछले हिस्से में दर्द की एक तेज लहर उठकर जिस्म के हर हिस्से में दौड़ गयी। बेयकींनी से मैं अमान को देखे जा रही थी। मेरे कानों में गूंज रहा था ''जोया तुम जर्नलिस्ट बनना, अपनी पहचान बनाना। तुम्हारे सपने मैं हर तरह से तुम्हारे साथ हूँ।''

दिल पूछने लगा, फिर जो अबतक चल रहा था, क्या था वह सब? क्या सिर्फ इंप्रेस करना? इससे पहले कि मैं कोई राय कायम करती, अमान ने एक मशवरा दिया, ''अच्छा...लिसिन जोया, तुम मना लेना न मेरे अम्मी अब्बू को।'' अगर वो नहीं माने तो.. मैंने बीच में टोकते हुए पूछा। कोई जवाब न आया। एक चुप्पी फैल गयी हमारे बीच.. और शायद पूरे कैफे में। अपने जवाब के हिस्से में मिली खामोशी

लिए मैं उठ गयी। दिल ने चाहा कोई ''रुक जाओ'' की आवाज पीछे से रोक ले। लेकिन न आवाज आई। न मैं रुकी। आँख के कोनों में आंसू का एक कतरा आया जिसे मैंने बह जाने दिया।

सड़क पे चलते हुए सोचती रही, मुहब्बत के दरिया के बीचो बीच पहुंचकर जो गहराई से खौफ खा जाए, पलट आए, उसे सजा मिलनी चाहिए। दुखे दिल से हमेशा दुआ तो नहीं निकलती न!

''''ब्रेक''''''

अम्मा के बुलाए मेहमानों का आज तकरीबन एक महीने बाद आने का प्रोग्राम बना था। और कैफे डे से निकलने के बाद इस बन्दे को आज, वक़्त मिला है कॉल करने का। लेकिन अब चाह कर भी रिसीव नहीं कर सकती थी। मैं घर के दरवाज़े पे खड़ी थी। दरवाज़ा हल्की सी कुंडी के सहारे अटका था। मैंने खोला और कॉरिडोर में आ गयी। कॉरिडोर आगे जाकर छोटे से दालान में फैल जाता था।

**दिल पूछने लगा, फिर जो अबतक चल रहा था, क्या था वह सब? क्या सिर्फ इंप्रेस करना? इससे पहले कि मैं कोई राय कायम करती, अमान ने एक मशवरा दिया, ''अच्छा... सपेजमद जोया, तुम मना लेना न मेरे अम्मी अब्बू को।'' अगर वो नहीं माने तो.. मैंने बीच में टोकते हुए पूछा। कोई जवाब न आया। एक चुप्पी फैल गयी हमारे बीच.. और शायद पूरे कैफे में। अपने जवाब के हिस्से में मिली खामोशी लिए मैं उठ गयी। दिल ने चाहा कोई ''रुक जाओ'' की आवाज पीछे से रोक ले। लेकिन न आवाज आई। न मैं रुकी। आँख के कोनों में आंसू का एक कतरा आया जिसे मैंने बह जाने दिया।**

मामूल के मुताबिक स्लिंग बैग को उतार कर मैंने दालान के कोने में रखी टेबल पर रखा। अस्सालामो अलैकुम अम्मा! सैंडल्स उतारते हुए थकी हुई आवाज में कहा। हाँ..हाँ.. वालैकुस्सलाम! आ गई जोया! जरा फटाफट कपड़े बदलकर जल्दी से यहाँ आ जा!

मैंने गर्मी में पसीने से सनी अम्मा को देखा। गुनगुने पानी से आटे को नर्म गूंधने की जुगत में लगी वह फिर से अब्बा पर भन्नाई पड़ी थी, ''कहा था, बिरयानी और कोरमा घर ही में बनाए ले रहे। रोटियाँ, कुछ मीठा और एक आध नाश्ते की चीजें बाज़ार से मंगवा लीजिये। लेकिन नहीं.. कह रहे हैं, बाहर की चपातियाँ चिमड़ा जाती हैं। तुम ज़रा अपने हाथों से बनाओगी तो नर्म बनी रहेंगी।''

कहते हुए उन्होंने आटे को सब तरफ से समेटा। फिर जोर से तसले के बीच में पटका और हुँहह... की भुनभुनाहट के साथ ठहरी बात को आगे बढ़ाया। ''सब बहाने हैं पैसे बचाने के। लेकिन अब कोई करे तो करे क्या ..जब अपनी ही किस्मत में तंगहाली लिखी हो तो दूसरे से क्या गिला..''

आटा, कुछ हाथों और कुछ बातों के प्रहार से पूरी तरह ढह चुका था। कुछ सेकंड का पॉज़ हुआ फिर आवाज़ तेज हुई, ''और तुम यहीं दरवज्जे पे खड़ी ही रहोगी क्या?'' मुझे अम्मा के इस रूप से खौफ आता था। इससे पहले कि वह छत पे रखी टंकी के पानी की तरह खौलने लगतीं मैंने किचन हेल्पर की जिम्मेदारी अपने कंधों पे लेना मुनासिब समझा।

जब जब अम्मा जज़्बाती तौर पर कमजोर पड़ने लगती हैं तब वह ऐसे ही बात, बिना बात तल्ख़ हो जाती हैं। कभी अब्बा पर, कभी तंगहाली पर, कभी किस्मत पर और कभी कभी मरहूम नाना नानी की आँखों को भी दो बातें पकड़ा ही देती, जो उनके हिसाब से, उनका रिश्ता तय करते वक़्त ठीक चुनाव न कर पाई थी। वैसे मुझे लगता था वह अब्बा से कोई नाखुश नहीं थीं। शायद शादी के फौरन बाद से बजट और खर्चों के बीच बैलेंस बनाते बनाते वो अपने मिजाज़ में सुख दुःख का बैलेंस करना भूल गयी थीं.. चिड़चिड़ाहट उनके मिजाज़ का मुस्तकिल हिस्सा रहने लगी थी। अब्बा समझते थे शायद। लेकिन छोटी–मोटी नौकरी और कुछ खिंचे तने हालात होने की वजह से वह धीरे धीरे खामोश हो गए थे। शायद अम्मा के तमाम शौक, अरमान न पूरे कर पाने का, मनचाही जिंदगी न दे पाने का उन्हें भी मलाल था। फिर भी वो अम्मा को खुश कर सकने के लिए जो कर सकते, करते जरूर थे।

जैसे अभी उन्होंने गर्दन उठाकर कोने के जालों को देखा। बिछी हुई चादरों की सिलवटें मिटाईं। बेसिन की सफाई का जाइजा लिया था। ''हाँ हाँ.. फिनायल की गोली भी रखवाए दे रहे हैं। आप जा के अखबार पढ़िये।'' अम्मा

जो बीच–बीच मे तिरछी निगाहों से अब्बा की हरकतें नोटिस कर रही थीं, टोंकते हुए बोली। अब्बा मुस्कुराते हुए चले गए। जानते थे, अम्मा का प्यार ऐसी तल्खियों में ही लिपटकर आता है।

इधर बावर्ची खाने में मेरी अंगुलियाँ कबाब को गोल शक्ल देकर आहिस्ता से तवे पे लिटा रही थीं। हाथ अपना काम कर रहे थे। जेहन अमान के इर्द गिर्द चक्कर काट रहा था। उसकी मुहब्बत, मुहब्बत में लिपटे वादे और वादों की भीतर से निकली चुप्पी मेरी पलकों पे नमक की तरह चुभ रही थी। तभी दरवाज़े पे गाड़ी के हॉर्न की आवाज़ आई। सिल्क पे चिकनकारी का काम वाला सूट, गले में जड़ाऊ सेट पहने एक अधेड़ औरत अपनी बड़ी सी गाड़ी से उतर कर अंदर आईं। महंगे कपड़ों में उनका शौहर और बेटा भी साथ था।

क्रॉकरी की प्लेटों में सजी मिठाइयाँ, नमकीन, सफेद ग्लास में बर्फ से ढँका रूह अफजा.. बाहिरी कमरे में नाश्ता लग चुका था। ''आप लोग तो कुछ ले ही नहीं रहे। अरे.. तकल्लुफ छोड़िये।'' अब्बा ने मुख़्तसर दुआ सलाम के बाद मिठाई की प्लेट को मर्द हज़रात की तरफ बढ़ाते हुए कहा। ''क्या जरूरत थी इस ज़हमत की भाईसाब!!''

खातून ने माहौल में अपनाइयत घोलने के लिए बीच में टोका फिर मुस्कुराते हुए कहा, ''बिटिया को तो बुलाइये। हमाए साथ वो भी नाश्ता कर ले।'' अम्मा के आवाज देने पर मैं दुपट्टा संभालते हुए कमरे में गयी। मैंने ईद वाला फिरोजी रंग का गोटा पट्टी काम का सूट पहना था। बालों को क्लचर में अटका कर खुला छोड़ दिया था। ''यह तीखी नाक और इसपर दीवाली के दिये सी टिमटिमाती दो बड़ी–बड़ी आँखें'' काजल लगाते हुए मुझे अमान की बातें याद आईं। अपनी नुमाइश लगाकर मैं खुश नहीं थी। फिर भी जाने कैसे शक्ल अच्छी लग रही थी।

कमरे में दाख़िल होने से लेकर बैठने तक खातून का बेटा मुझे सर से पैर तक देख रहा था। और खातून अपने बेटे को, जो लगातार मुस्कुरा रहा था। अब मर्द हज़रात ने अपनी हाज़िरी दर्ज़ की। गला साफ कर के बोले, बेटा हमारा इंटर तक ही पढ़ पाया। अल्हमदुलिल्लाह हमारा टेक्सटाइल का इम्पोर्ट एक्सपोर्ट का बिजनेस इतना फैला हुआ है कि न चाहते हुए भी गल्ले पे बिठाना पड़ा।'' उनका अंदाज़ बता रहा था, कम तालीम का उन्हें कतई अफसोस नहीं।

बीच में हँसते हुए खातून ने दखल दी, ''हमने तो कह रखा था तनवीर से कि भईई...कोई पसंद वसंद हो तो बताना'' फिर आँखें फैला कर लफ्जों पे जोर देकर अम्मा की तरफ मुखातिब हुई, ''लेकिन आपा!!! मेरे नेक शिफत बच्चे ने कहा, अम्मी आप जहाँ अच्छा समझें। बस जरा लड़की बीए वीए हो तो बेहतर होगा.. क्या है न आपा! माँ पढ़ी लिखी हो तो बच्चों की परवरिश अच्छी हो जाती है। वैसे, जोया तो माशा अल्लाह बी.ए. कर चुकी है न? मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया या शायद मैं वह सुन रही थी जो वो कह के भी नहीं कह रही थीं।

''हाँ हाँ..बस समझिये हो ही गया और पढ़ने के साथ साथ घर का सारा काम भी बखूबी अंजाम देती है'' जवाब न पाकर अम्मा ने मुझे घूरते हुए बात संभाली। ''माशा अल्लाह!! अपने बच्चे, घर–गृहस्थी संभाल ले जाएं बस और क्या चाहिए। हमें कौन सा नौकरी करानी है।'' कहकर खातून जोर से हँसी और शगुन के तौर पर नोटों की एक गड्डी मेरी पसीने से भीगी हथेली पर रख दी।

'वो गड्डी नहीं कोई भारी पत्थर था जो मेरे दिल पे गिरा था। साँसों का उतार चढ़ाव वजनी होने लगा। तलवों से पसीना निकला लेकिन जाने कहाँ गया..पैरों के नीचे ज़मीन ही नहीं थी। अम्मा के सर से बोझ उतर रहा था। मेरी किस्मत और बाकी ज़िंदगी तय हो रहे थी। मेहमानों की मुस्कुराहटें समेटे नहीं सिमट रही थीं। मेरे आँसू....बस..किसी तरह रुके थे। तमाम बेज़ारी के बावजूद मुझे किसी की निगाह अपने चेहरे पे महसूस हो रही थी। कोई मेरी डबडबाई आँखों में कुछ ढूँढने की कोशिश कर रहा था। यकीनन वो अब्बा होंगे।

मैं आहिस्ता कदमों से कमरे में चली आई। सर में खून नहीं, हथौड़े चल रहे थे। तभी मोबाइल वाइब्रेट हुआ। अमान का मैसेज था। जैसे बेवजह बीमार को करार आ जाए वाली कैफियत हुई उस वक़्त। मैसेज ओपन किया और सारा करार काफूर हो गया। लिखा था, ''तुमसे मुहब्बत करना मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती थी। तुम्हारे लिए मैं नहीं, सिर्फ तुम और तुम्हारा कॅरिअर अहम है। यू आर नथिंग बट जस्ट ए सेल्फिश...सेल्फिश... लफ़्ज़ को धीमे से दोहरा कर आँसूं

और गुस्से को पीते हुए मैंने मोबाइल बेड पर फेंक दिया। ''नहीं, मैं बेवकूफ थी अमान! जिसने तुमपे, तुम्हारी बातों पे भरोसा किया और यह उम्मीद की, कि तुम मुझे समझते हो।''

आँसुओं का कोई बांध छूट गया। खुद में बड़बड़ाते हुए सोच रही थी, बेवकूफ थी मैं जिसने अपनी माँ की बातों पे भरोसा किया। शादी के बाद हम जैसों को आजादी नहीं, सिर्फ जिम्मेदारियों की कैद मिलती है। किसी को हमारी खुशी, पसंद, ना–पसंद से कोई मतलब नहीं.. खुद ही खुद को गले लगाए मैं सोते–सोते रो रही थी या रोते–रोते सो रही थी, पता नहीं।'

फज्र की अजान के बाद दरवाज़े की खटपट से आँख खुली। अब्बा नमाज़ पढ़ के घर आ चुके थे। मैं कमरे से निकलकर बाहर आई। आज मेरी बेटी जल्दी उठ गयी? चाय का घूँट ले रहे अब्बा ने मुझे डायनिंग टेबल की तरफ आता देख दुलराते हुए पूछा। मैं वहीं बैठ गयी।

''ससुराल में जल्दी उठने वाली बहुएं ही तारीफ पाती हैं। अभी से आदत डालेगी तो अच्छा रहेगा।'' ताकीद करते हुए अम्मा का जवाब आया। मैं ख़ामोश रही। अब्बा मुझे देखे जा रहे थे। रात भर जागी, कुछ सोई, रोई, थकी आँखों के पपोटे सूजे थे। चेहरा उदास। उन्होंने फिक्रमंदी से मेरे सिर पर हाथ फिराते हुए पूछा, तबीयत ठीक है न बेटा?

''मुझे अभी शादी नहीं करनी अब्बा! आँसुओं को रोक कर मैंने बगैर सर उठाए जवाब दिया। हैं?? अम्मा को जैसे करंट लगा। 'मुझे जर्नलिस्ट बनना है अब्बा! कहते हुए मैंने शहर के सबसे अच्छे मास कम्युनिकेशन कॉलेज का भरा हुआ एडमिशन फार्म आगे कर दिया। मेरी आवाज़ धीमी मगर लहजा मजबूत था। मैंने आगे बात जोड़ी, ''पैसों की फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं। स्कॉलरशिप मिल जाएगी। मुझे अपने पैरों पे खड़ा होना है। अपनी पहचान बनानी है। सिर्फ किसी की बीवी या माँ बनकर नहीं रह जाना। और अम्मा!..अब मैंने अम्मा की तरफ देखा। ''आपको लगता है तमाम मुश्किलों का हल पैसा है तो वो मैं अपने दम पे कमा लूँगी!'' हैं!! अल्लाह की पनाह!! क्या कहा, कमा लोगी? अम्मा गुस्से में तमतमा उठी। तुम्हें पता है न, हमारी बिरादरी में कमाने वाली लड़कियाँ अच्छी नहीं समझी जातीं और.. और जो कल हम उस रिश्ते को हाँ कह चुके हैं उसका क्या??

उम्मीद के बरअक्स अम्मा को तमतमाना ही था। उनका सवाल वाजिब था, नहीं था, पता नहीं लेकिन इसका जवाब मेरे पास नहीं था। मैं दम साधे किसी जादू के इंतजार में अब्बा को देख रही थी। और कैसा ताज्जुब .. इस वक़्त अम्मा भी उन्हीं की तरफ देख रही थीं। अब्बा देर से निगाह झुकाए ज़मीन देख रहे थे। कुछ देर बाद उन्होंने सर उठाया। मेरा दिल सीने के बजाय पेट में धड़का। उन्होंने एक गहरी साँस छोड़ी। मैंने चटखाती हुई अपनी अंगुलियाँ रोकी। वो अम्मा से मुख़ातिब हुए, 'शादी ज़िंदगी का अहम् फैसला है बानो! इसे यूँ थोपा नहीं जाना चाहिए।

बात सिर्फ इतनी है कि ज़ोया जिंदगी को अपनी तरह से जीना चाहती है..उसे जीने दीजिये! पढ़ने दीजिये! कमाने दीजिये! हम माँ–बाप होकर अपनी औलाद को नहीं समझेंगे तो कौन समझेगा!' पहली बार उनका लहजा सख़्त था।

फिर जैसे वाकई में जादू हो गया..अम्मा पहली बार चुप हो गईं। ज़रा ठहरकर एक आख़िरी बार धीमी आवाज़ में कोशिश की, लेकिन..लोग क्या कहेंगे?? हमारे ख़ानदान में अब तक कभी किसी लड़की ने नौकरी नहीं की? ''हर चीज़ कभी न कभी पहली बार होती है बानो! बाकी लोग जो कहेंगे... हम देख लेंगें।'' ◆

**इधर बावर्ची खाने में मेरी अंगुलिया कबाब को गोल शक्ल देकर आहिस्ता से तवे पे लिटा रही थीं। हाथ अपना काम कर रहे थे। जहन अमान के इर्द गिर्द चक्कर काट रहा था। उसकी मुहब्बत, मुहब्बत में लिपटे वादे और वादों की भीतर से निकली चुप्पी मेरी पलकों पे नमक की तरह चुभ रही थी। तभी दरवाजे पे गाड़ी के हॉर्न की आवाज आई। सिल्क पे चिकनकारी का काम वाला सूट, गले में जड़ाऊ सेट पहने एक अधेड़ औरत अपनी बड़ी सी गाड़ी से उतर कर अंदर आई। महंगे कपड़ों में उनका शौहर और बेटा भी साथ था।**

**पता : 474 ए/92, वृहमनगर,**
**सीतापुर रोड, लखनऊ–226020**
**मो. : 7275652831**

# हौंसला

❑ रतन खंगारोत

अरे! दिव्या, कहां चली गई बेटा ? जरा बाहर आना! दिव्या के पिता उसे आवाज दे रहे थे। हर समय दिव्या पर क्रोध करने वाले उसके पापा आज उससे बड़े प्रेम व दुलार से बात कर रहे थे। आज तो उनकी खुशी का कोई अंत ही नहीं था, और हो भी कैसे? दिव्या, ''भारतीय प्रशासनिक सेवा'' में पूरे भारत में प्रथम स्थान पर आई थी।

परिणाम आते ही सारे रिश्तेदारों के फोन आने लग गए थे। सभी बधाइयां दे रहे थे और अभी जब अखबार वाले दिव्या का इंटरव्यू लेने आए तो उनको देखते ही आस–पड़ोस वालों की भीड़ एकत्रित हो गई थी।

मिस्टर शर्मा (दिव्या के पापा) का सीना गर्व से और चौड़ा हो गया था। दिव्या ने जैसे ही अपने पापा की आवाज सुनी वह अपनी मम्मी को लेकर बाहर आ गई थी। जैसे ही दिव्या बाहर आई,सभी उसे बधाई देने लगे। दिव्या ने भी एक हल्की मुस्कान के साथ सभी को धन्यवाद कहा।

मिस्टर शर्मा ने अपने घर के बाहर ही कुर्सियाँ रखवा दी और वहीं पर अखबार वालों से इंटरव्यू लेने को कहा। दिव्या के दादाजी, चाचा जी और भाई व सभी आसपास वालों का जमावड़ा लग गया था। जो लोग हर समय दिव्या को ताने मारने में लगे रहते थे, वो सभी बड़े प्रेम से अपना हाथ दिव्या के सिर पर रखकर फोटो खिंचवाने में लगे थे।

जब दिव्या को इंटरव्यू देने के लिए आगे आने के लिए कहा तो वह अपनी मां का हाथ पकड़ कर आगे ले आई और वही कैमरामैन के सामने बैठा दिया। सभी दिव्या और उसकी मां को देखने लगे थे।

अखबार वालों ने दिव्या को आई.ए.एस. में प्रथम रैंक प्राप्त करने के लिए बधाई दी और अपना इंटरव्यू प्रारंभ किया।

रिपोर्टर– ''हां तो मिस दिव्या, आपने ''भारतीय प्रशासनिक सेवा'' में प्रथम स्थान प्राप्त

किया है, इसके लिए आपने किस तरह से तैयारी की? आप कितने घंटे अध्ययन करती थीं? और अपनी सफलता का श्रेय आप किस देना चाहती हैं?''

दिव्या को जिन प्रश्नों का इंतजार था। वही प्रश्न उसके सामने थे। क्योंकि वह पूरी दुनिया को अपनी सफलता का राज बताना चाहती थी।

दिव्या– ''सर्वप्रथम तो मैं, आपको बताना चाहती हूं कि मुझे यह सफलता प्रथम प्रयास में नहीं मिली। इससे पहले भी मैंने दो बार यह परीक्षा दी थी। परंतु मैं इंटरव्यू तक नहीं पहुंच सकी।

कोई विद्यार्थी हो या नौकरी की तैयारी करने वाला, उसे प्रोत्साहित और हताश करने का काम उसके परिवार वाले व रिश्तेदार ही करते हैं। और यह आसपास वाले हर बात में मसाला ढूंढने का प्रयास करते रहते हैं। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ था। जब मैं आठवीं क्लास में थी, तभी से आई. ए.एस. बनने का सपना देखने लगी थी। पापा और मां ने मुझे बहुत सपोर्ट किया।

कॉलेज की पढ़ाई पूरी करते ही मैं आर ए एस की परीक्षा दी परंतु मैंने शुरुआत में ही असफलता को देखा। जब मैं प्रथम प्रयास में सफल नहीं हुई तो मेरे परिवार वालों ने मुझे नकारा साबित कर दिया और मेरी शादी की तैयारी करने लगे। मैंने विरोध किया कि मुझे आई ए एस बनना है, तो सभी ने यही कहा कि तेरे बस का नहीं है तुम घर का काम सीखो ताकि तुम्हारी शादी करें। दादाजी अपनी जिद पर अड़े रहे। मैं अपने पापा के सामने हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाने लगी कि मुझे एक मौका और दे दो। मेरे साथ में मेरी मम्मी ने भी पापा को मनाने की बहुत कोशिश की, तब कहीं जाकर मेरे पापा ने मुझे एक मौका और दिया। मेरे दादाजी और अन्य घर वाले तो बहुत नाराज हुए पर मैं खुश थी, कि मेरे पापा और मम्मी मेरे साथ हैं।

मैंने कोचिंग की और पूरी मेहनत व लगन से परीक्षा दी। परंतु किस्मत में कुछ और कहानी लिखी थी। और मैं इस बार इंटरव्यू में रह गई। सबने मेरा बहुत मजाक बनाया। किसी ने ताने दिए की मैडम कलेक्टर बनेगी। इतना आसान लगा? फिर सभी हंसने लगते थे। परंतु मैंने अपने आप को टूटने नहीं दिया था। मैं फिर से परीक्षा देना चाहती थी। परंतु यह सब आसान नहीं था। अब पापा भी मेरे खिलाफ हो गए थे। दादाजी के कहने पर पापा मेरे लिए लड़का देखने लगे थे। वह मेरी जल्द से जल्द शादी करवाना चाहते थे। एक दिन मैं छत पर जाकर एकांत में रो रही थी। तभी एक हाथ मेरे सिर पर आया, और वह आवाज जिसने मुझे ''हिम्मत दी फिर से खड़ा होने की''। ''हौसला दिया ऊंची उड़ान का।'' वह कोई और नहीं मेरी मां थी। मेरी मम्मी ने मेरे आंसू पोंछे, और बोली कि ''आंसू बहाकर पंख गीले करेगी, तो उड़ान कैसे भरेगी? तुझे तो अभी आसमान छूना है। मेरी मम्मी ने मुझे कहा कि तू फिर से तैयारी कर। और फॉर्म भर ,पर किसी से कुछ ना कहना। सभी को इसी गलतफहमी में जीने दे कि तू परीक्षा नहीं दे रही है।

मैंने ऐसा ही किया मैं अब छुप कर पढ़ने लगी थी। जब परीक्षा की तारीख नजदीक आई तो मम्मी ने सभी घर वालों से कह दिया, कि दिव्या को सिलाई सीखनी है। तो इसे कुछ दिनों के लिए इसकी मौसी के पास शहर भेज देते हैं। और मुझे मेरी मौसी के पास शहर भेज दिया गया। मेरी मम्मी ने मौसी को सब समझा दिया था। वहां शहर में मेरी मौसी ने मेरी मदद की और मैंने गुपचुप तरीके से तीसरी बार आई ए एस की परीक्षा दी।

मेरे इंटरव्यू की तारीख नजदीक थी। मैं बहुत घबरा रही थी। तब मेरी मम्मी अपनी बीमारी का बहाना बनाकर मेरे पास आ गई थी। मेरी हिम्मत बनने के लिए। जब मैं अपनी मां को देखती हूँ, उनका मेरे प्रति विश्वास देखती हूँ,तो मैं दुगनी मेहनत करती थी। मेरा इंटरव्यू होने के बाद मैं और मम्मी गांव वापस आ गए थे। हमें इस बार पूरा विश्वास था कि मेरा सिलेक्शन हो जाएगा पर फिर भी हमने किसी से कुछ नहीं बताया था। आज जब आई ए रस का परिणाम आया तब मैंने अपने पापा को बताया था। उन्होंने मुझे गले लगा लिया था। उनकों विश्वास ही नहीं हो रहा था। लेकिन अब जब उनके पास सभी के फोन आ रहे हैं। तो अपने आप को मेरे पापा कहलाने में गर्व महसूस कर रहे हैं। ◆

**पता : 15–ए, जीनमातानगर, शेखावत मार्ग,**
**जयपुर–302012 (राजस्थान)**

**मो. : 7665798012**

# कसक

❑ अंजू त्रिपाठी

माँ की हिदायत के अनुसार किसी भी तरह सूर्योदय से पहले घर पहुँच जाना था। यहाँ से घर तक की दूरी है कि आज अनायास ही बढ़ती हुई जान पड़ रही है।

है न ! कमाल की बात घर के नाम से चिढ़ जाने वाला लड़का जल्दी से जल्दी घर पहुँचने के लिए बेचैन है। माँ की याद बहुत जोर से आकर सीने को छीलते हुए गले को चोक कर रही है।

तेज बारिश की वजह से आवाजाही बिल्कुल ठप्प है। एक शेड के नीचे लगभग तीस लोग खड़े हैं। आधे भीग रहे हैं और आधे अंदर हैं। जो पूरी तरह छप्परनुमा शेड के अंदर हैं, उनके भी आधे पैर शेड की धारियों से झरती हुई मटमैली बौछारों से नम हैं। कुछ दो–चार मेरे जैसे लोग भी हैं जो पूरी तरह से भीगते हुए बारिश का आनंद ले रहे हैं।

मेरे ठीक सामने नीले रंग की शर्ट पहने जो साहब खड़े हैं वह अपनी महबूबा को प्रोटेक्टक्शन देते हुए कभी पूरे बाहर आ जा रहे हैं कभी बालों में उंगलियाँ फिराते हुए अंदर की ओर सरक जा रहे हैं कभी हथेली में पानी रोपकर सबकी नजरों से बचाते हुए प्रेमिका के कपड़ों पर डाल रहे हैं। वैसे सज्जन चाहें तो पूरे के पूरे शेड के भीतर आ सकते हैं किंतु उनका उद्देश्य इस समय अपनी प्रेयसी को रिझाना है यानि कि जतला रहे हैं कि अपनी जानेमन का वह कैसे ख्याल रख सकते हैं। महिला के चहरे को देखकर यह आसानी से समझा जा सकता है कि साथी की शरारतें उसे दिलकश लग रही हैं।

महिला बला की खूबसूरत, स्मार्ट तथा सभ्रांत परिवार की अच्छी पढ़ी–लिखी जान पड़ती है। वे दोनों हिंदी या अंग्रेजी में बात न करते हुए किसी अन्य भाषा में बातचीत कर रहे हैं, शायद फ्रेंच में। ऐसा बिल्कुल भी मत समझिएगा कि उनके फ्रेंच में बात करने से प्रभावित होकर उन्हें पढ़ा–लिखा बोल रहा हूँ क्योंकि मनोविज्ञान भी कहता हैं ''भाषा ज्ञान हम अपने परिवेश से भलीभाँति ग्रहण कर सकते हैं।''

वैसे फ्रेंच मुझे आती नहीं, किंतु मेरे कुछ दोस्त ऐसे रहे हैं जिन्हें इस भाषा की अच्छी जानकारी है, उन्हीं से कुछ वाक्य लगातार सुनते–सुनते सीख गया हूँ।

''प्रेमी जोड़े के लिए कमाल का मौसम है बारिश'' रूमानियत से भीगते हुए दोनों इक–दूजे को पी लेना चाहते हैं ज्यों भुरभुरा रेत सोख लेता है जल का एक–एक कतरा।

पर्पल सूट वाली लड़की भी अपने साथी के बाहों में कुछ यूँ ही डूब कर भीग रही है। सबकी घूरती नजरें उनको तनिक भी डिगा नहीं पा रही हैं। वैसे सच में दोनों एक साथ कमाल लग रहे हैं।

''रंगों के बिना जिंदगी कैसी बदरंग होगी न?''

''पानी के पास भी कहाँ उसका कोई रंग है? फिर कितनी जीवंत है। उदासी से कोई ताल्लुकात नहीं रखती। स्वयं के रंगहीन, गंधहीन जीवन पर गुमान करती है, शायद इसी आत्मविश्वास की वजह से मूर्छित में भी प्राण भरती है।''

''तमाम कलाओं ने ही दुनिया को जीवित रखा है वरना मनुष्यों के पशुवत व्यवहार ने कबका लील लिया होता समूची सृष्टि को।''

''तीनों ने जोर से ठहाका मारते हुए बारिश को कोसना शुरू किया'' भाई ! बारिश और बीवी कब बरस जाय कुछ पता नहीं चलता है?'' सामने खड़ी दो अन्य महिलाओं की ओर देखते हुए आपस में आँख दबाकर इशारा किया और फिर एक बेतुकी हँसी गूँज उठी''

स्कूल जाने वाले छोटे–छोटे बच्चे अपने बड़े–बड़े बस्तों के साथ खड़े होकर बारिश के थमने का इंतजार कर रहे थे। कुछ सोच रहे थे कि बारिश तब तक न रूके जब तक कि उनके स्कूल के गेट बंद न हो जाएं।

''सच मायने में देखा जाय तो इस दुनिया में जिंदादिली से जीवन का आनंद केवल बच्चे ही उठाते हैं। भारी बैग के कारण उनके कंधे की लचक साफ देखी जा सकती है फिर भी वह एक–दूसरे के साथ छेड़खानी नहीं बंद कर रहे हैं।''

जब सभी बेवक्त आई आँधी और बारिश को भला–बुरा कह रहे हैं तब उस कठिन वक्त में भी ये बच्चे कभी एक ऊँगली, कभी दो, कभी पाँच दिखाते हुए ऑड एंड ईवन का गेम पूरी मस्ती से खेल रहे हैं।

मेरे पड़ोस की सबसे सुंदर नीली चमकीली आँखों वाली लड़की भी वहीं खड़ी है, जिसे मैं बेहद पसंद करता हूँ। वह भी मुझे पसंद करती है लेकिन मुझसे कम। इसका मन भी उतना ही सुंदर है जितनी कि वह खुद। जब भी मैं इसकी आँखों और होठ की तारीफ करता हूँ वह खुश होने के बजाय रूठ जाती है और कहती ''कभी तो मुझे पूरी की पूरी खूबसूरत बोला करो।''

बारिश देखकर मन हो रहा है ''उसे शेड से निकाल कर अपने पास खींच लूँ और हम साथ में भीगें किंतु मेरा ऐसा करना उसको पसंद नहीं है। वह कहती है कि शादी के बाद मेरे साथ लिपटकर जब तक मैं चाहूँगा तब तक भीगेगी।''

''ना..ना... अभी परिवार वालों से हमने अपनी शादी की बात नहीं की है। हमारे बीच तय हुआ था हममें से पहले जिसे बढ़िया नौकरी मिलेगी वह हमारे रिश्ते की बात अपने घर में करेगा। पहले मुझे जॉब मिली है तो शर्त के मुताबिक रिश्ते की बात मुझे ही करनी थ । वैसे माँ को मैंने पहले ही बता रखा था जिससे मेरे ज्वाईन करते ही वह मेरे लिए रिश्ता न ढूँढ़ना शुरू कर दें''।

मेरी नौकरी लगने पर जितनी खुश माँ हुई थी, वह भी उतनी ही खुश हुई थी। मैंने इसके लिए एक घड़ी ली है जो कि सरप्राइज है। इसको सरप्राइज के रूप में कुछ लेना ज्यादा पसंद है। अभी सिर्फ मैं ही इसे देख पा रहा हूँ, वह मुझे नहीं देख पा रही है ''जब तक हम किसी शेडनुमा परिधि में होते हैं तब तक कहाँ ही खुले में रहने वालों को देखने की कोशिश करते हैं।''

पोस्टिंग दूसरे शहर में होने की वजह से पूरे एक महीने बाद घर आया हूँ। अपना घर, अपनी जगह, अपना कमरा, अपना परिवार खासकर माँ बहुत याद आती हैं, दूसरे शहर में जाने के बाद से। पापा और बहन भी याद आते हैं लेकिन माँ से थोड़ा कम। अब तो सौम्या भी उसी तरह याद आती है जैसे माँ। हाँ,, हाँ,, सौम्या वही लड़की है जिसकी आँखें नीली और चमकीली हैं।

कल सुबह चार बजे अपने शहर के मात्र चार लाईन वाले छोटे से रेलवे स्टेशन पर पहुँचा तो वहाँ जाने कितनी देर पहले से ही माँ, पापा और बहन स्टेशन आ चुके थे मुझे लेने के लिए। मैं ट्रेन से उतरा तो माँ का वहीं रोना शुरू हो गया और पापा का माँ को डाँटना, बहन उस नए जगह के

बारे में घर पहुँचने से पहले ही सब जान लेना चाहती थी। घर आना किसी उत्सव की तरह मालूम हो रहा था मुझे। किसी चीज की कीमत तब और पता चलती है जब हम उससे दूर हो जाते हैं।

शाम से दोस्तों का आना–जाना शुरू हो गया। दोस्तों व रिश्तेदारों से मिलने–जुलने में सारा समय निकल जाता है और परिवार के साथ रहकर भी उनसे ठीक से मिलना नहीं हो पाता है। जब से आया हूँ बहन ने एक बार भी लड़ाई नहीं की। देख रहा हूँ एक महीने में ही यह नासमझ बड़ी और खूब समझदार हो गई है जबकि मुझे वह लड़ती हुई और नासमझ ज्यादा अच्छी लगती है।

हलाँकि मैं हमेशा उसे यही कहकर छेड़ता था आखिर कब समझ आएगी तुझमें। ''माँ मेरे अकेले होने का इंतजार कर रही है, कहती उसे बहुत सारी बातें करनी है मुझसे। पापा तो शुरू से ही अपनी भावनाओं को दबा कर रखते हैं। मुझे देखकर दबे होठों मुस्कुराकर चले जाते हैं।''

दोस्तों ने एक पार्टी ऑर्गनाइज की है मेरी नौकरी लगने की खुशी में। पाँच के ग्रुप में मुझे ही सबसे पहले गवर्नमेंट जॉब, वह भी क्लास वन पोस्ट मिली है तो सब बहुत खुश हैं और मोटिवेटेड भी। नाइट आउट का प्लान बना है इस बार।

''वे कह रहे हैं इस बार जीत बड़ी है तो जश्न और जगह भी अलग होनी चाहिए। मेरे लिए वेन्यू और मेन्यू दोनों सरप्राइज हैं।''

''मैं भी बहुत एक्साईटेड हूँ क्योंकि यह मेरा पहला दिन होगा जब मैं दोस्तों के साथ अकेले बाहर जाऊँगा। ऐसा नहीं कि पहले किसी पार्टी में जाता ही नहीं था। खूब जाता था, दोस्तों की बर्थडे पार्टी में परन्तु पापा से सख्त हिदायत मिलती थी दस बजने से पहले लौट आने की। अगर दस का सवा दस हो गया तो पापा उसके घर के सामने स्कूटर लिए खड़े होते थें।

नाइट आउट में गर्ल्स भी आ रही थीं। मैं चाहता था सौम्या भी चले मेरे साथ। वे लड़कियाँ सौम्या की भी सहेलियाँ थीं। सौम्या के घर में अलाऊड नहीं है कि वह पूरी रात कहीं पार्टी करे सो नाइट आउट भी शादी तक के लिए स्थगित हो गया।

माँ नहीं चाहती थीं कि उनको छोड़कर मैं कुछ घंटे के लिए भी घर से बाहर जाऊँ। पहले तो वह किसी तरह नहीं मान रही थीं फिर मेरा मन देखकर पापा ने भी उनको समझाया कि बच्चा जवान है बाहर अकेला रहता है। यह क्या कम बात है? जो अभी भी हमसे इजाजत लिए बिना कहीं बाहर नहीं जा रहा है। इसके बाद भी उन्होंने पूरी तरह हामी नहीं भरी लेकिन जिद्दी माँ का जिद्दी बेटा जब उन्हें मनाएगा तब भला कैसे नहीं मानतीं वह।

घर से निकलते हुए बहन ने कहा ''भईया सैटरडे संडे मेरी भी छुट्टी है तब मैं भी आपके साथ नाइट आउट पर चलूँगी।'' सुबह जल्दी लौट आना बेटा...मंदिर जाना है मैंने मन्नत माँगी है ... तुम्हारी अच्छी नौकरी के लिए।''

माँ ने ये वाक्य रूक–रूक कर बोले थे, अंदर से बाहर गेट तक आते–आते।

यारों के साथ जीवन के फलसफे अलग हो जाते हैं। विक्रांत आठ बजे अपनी कार लेकर मेरे घर पहुँच चुका था। अब हमें बाकी दोस्तों को पिकअप करते हुए गंतव्य तक जाना था। दो कार थी हमारे पास, लड़कियों को मिलाकर कुल नौ लोग हो गए थे हम। पाँच थे हम जिगरी दोस्त, एक था हमारे जिगरी दोस्त विक्की का जिगरी दोस्त और चार लड़कियाँ।

''सौम्या ने पहले ही हिदायत दे दी थी कि लिमिट में रहना है मुझे और हर एक घंटे में उसे वीडियो कॉल भी जरूर करनी है।''

विक्रांत की कार में पाँच लोग थें दूसरी कार में चार। पूरे रास्ते तेज आवाज में म्यूजिक चलाते हुए हम रात को पी रहे थे। खुली हुई विंडो से सरसराती हवाएँ कानों में अलग तरह की धुन सुनाकर मदहोश कर रही थीं। रात की चाँदनी पत्तों पर जगह–जगह छिटकी हुई ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे मखमली कपड़े पर सलमा सितारे जड़े हों।

''उफ्फ ! दोस्तों के बिना ऐसी हसीन रात कैसे नसीब हो पाती।''

डेस्टिनेशन प्वाइंट पर हम पहुँच चुके थे, यह एक पब था।

यहाँ लोग देश–दुनिया से बेखबर, खुद को खुदा मानकर खुद में गहरे डूबे थे। यह अलग दुनिया थी। काश! सौम्या साथ होती मेरे। नहीं,, नहीं,,, अच्छा ही है वह साथ

नहीं है वरना मुझे पल भर भी न रूकने देती यहाँ। उसके नजरिये से देखूँ तो ऐसी जगहें इंसान को भुला देती है कि वह वास्तव में क्या हैं? लोग स्वयं को स्वयं से छुपाने के लिए ही ऐसी जगहों की ओर रूख करते हैं।

''सबके हाथ में भरी हुई गलास है। जाम खाली हुए जरा भी देर न होती कि दुबारा भर दी जाती। सब नशे में थें, कुछ आधे कुछ पूरे। कई ग्लास खाली करने के बाद भी नशा जिनके बेहद करीब नहीं आ रहा था, वह जितनी फुर्ती संभव थी उससे भी तेजी से बियर गटक कर नशे का आह्वान कर रहे थे।''

''यहाँ किसी के चेहरे पर कोई भाव नहीं था यानि कि सभी चेहरे एक जैसे भावशून्य। खुशी में कौन पी रहा है या गम में कौन पी रहा है, यह बताना असंभव जैसा ही था।''

दो से तीन ग्लास खाली करने के बाद मैं भी उसी रौ में बहने लगा– ''ऐसा बिल्कुल मत समझिएगा कि मैं पहली बार पी रहा हूँ।''

''हाँ यह बात और है कि रूटीन में नहीं पीता हूँ और सबसे बड़ी बात माँ–पापा अब तक यही मानते हैं कि उनका बेटा शराब जैसी किसी नशे वाली चीज को हाथ नहीं लगाता है।''

''मैं पूरी तरह होश में था, जब पब से निकला। पूरी तरह होश में था, यह कहना मुझे शराब की इंसल्ट करना जैसा लग रहा है।''

इस बार विक्रांत की कार में पहले ही लड़कियाँ बैठ चुकी थीं सो मुझे विक्की की कार में बैठना पड़ा। मैं चाहता भी था वापसी में सिर्फ लड़के ही हो साथ में। क्योंकि पीने के बाद जबान कब लड़खड़ा जाय पता भी न चलता। लड़कियाँ यदि सौम्या से कुछ भी कह देगी तो कई दिन उसको मनाने में निकल जायेंगे।

वापसी में तेज म्यूजिक संग लड़को का हुड़दंग शामिल था। जोश बिल्कुल पहले जैसा था और होश पहले से थोड़ा कम। सौम्या की कॉल दो बार आई मैंने रिसीव नहीं किया। शायद वह पूरी रात सोई नहीं होगी। माँ का फोन तीन बजते ही आ गया, नहीं उठाया तो उन्होंने मैसेज किया ''तू जल्दी पहुँच बिना कुछ खाए–पीए मंदिर चलना है।''

''मुझे तेज गुस्सा आ रहा था माँ पर कि पूरी रात का जगा लड़का कैसे कहीं जा पाएगा वो भी तब जबकि वह नशे में भी है। बेशक उनको नहीं पता है मेरे ड्रिंक करने की बात परंतु मेरे रात भर जगने की बात तो पता ही है न।''

''मेरे जेहन में फिलहाल यही बात कौंध रही थी, इतनी आजादी तो सबको मिलनी ही चाहिए कि वह कुछ पल या कुछ घंटे या कुछ दिन बिना किसी जवाब–तलब के बिता सके।''

''सौम्या भी पता नहीं क्या–क्या ही सोच रही होगी कि मैं अन्य लड़कियों के साथ मौज मना रहा होऊँगा।''

''सबको अपने हिस्से का सुख चाहिए अपनो की जिंदगी से'' सामने वाला क्या चाहता है भला किसी को कहाँ फर्क पड़ता है–यह झुझुलाहट में मैं नहीं मेरे अंदर का शराब बोल रहा था।

''कभी हम खिड़की से बाहर हाथ निकालकर वूवूहूहूहू की आवाज निकालते तो कभी आधी गर्दन निकाल कर शोर मचाते। हम एक सभ्य नागरिक हैं, यह भूल चुके थे।''

''मुझे मजा आ रहा था, जीवन का नया रूप आनंदित कर रहा था। जब तक बीयर का आखिरी कतरा मुझमें था तब तक मुझे घर पहुँचने की जरा भी जल्दी नहीं थी।''

अब जबकि होश में आया हूँ तो अपनी बेहूदा बेहोशी पर खीझ मच रही है। माँ बिना कुछ खाए–पीए बैठी होगी। बेचैनी के मारे घर के भीतर नहीं रह पाती है, न खुद चैन से बैठेगी न किसी को बैठने देगी।

मुझे बार–बार फोन कर रही होगी, फोन नॉट रीचेबल बताएगा तब एक–एक करके बारी–बारी से सबको फोन करेगी और मेन गेट पर ही खड़ी रहेगी फिर जब थक जाएगी तो बैठ जाएगी और फिर पसीने से तरबतर होकर आँचल से पंखा झलने लगेगी। कोई भी नियत समय से लेट होता है तो वह घबरा जाती है।

''बहन माँ के गले में हाथ डालकर उनके सीने से चिपट कर कहेगी चिंता मत करो तुम, बारिश बंद होते ही भईया आ जाएगा।''

''पापा के अंदर हमेशा की तरह भीतर ही आग लगी होगी लेकिन वह बाहर से यही दिखाने की कोशिश करेंगे कि वह बिल्कुल ठीक हैं उन्हें उस आग से जलन नहीं हो रही है।''

पानी थमने लगा है किंतु हल्की बूँदा–बाँदी अभी भी है। बूँदों का अनुमान यत्र तत्र भरे हुए गढ़हों में होने वाली टप–टप से ज्यादा मालूम चल रहा है। चारो ओर धुली हुई रोशनी से शहर चमक रहा है। नहायी–धोयी काली जेब्रा क्रॉसिंग से सजी सड़कें सबको अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं।

ठहरे हुए लोग अब गतिमान हो गये हैं। भरी हुई शेड लगभग खाली हो चुकी है। बस, ऑटो, रिक्शा पब्लिक से खचाखच भर चुके हैं।

''मुझे भी माँ के पास जल्द ही पहुँचना है। मैं गाड़ियों को आवाज दे रहा हूँ, उनके पीछे भाग रहा हूँ यहाँ तक कि ऑटो पर चढ़ने लगा तब तक उसने गाड़ी आगे बढ़ा ली–किसी ने लिफ्ट नहीं दी तो मैं स्वयं को घसीटते हुए पैदल ही निकल पड़ा कि जब तक पहुँचुँगा नहीं, माँ गेट पर ही खड़ी रहेगी। धुली हुई सड़के मेरे पंजो से सट नहीं रही हैं। धूप के चकते आसपास के दीवारों पर फैले हुए हैं फिर भी मैं घना अँधेरा महसूस कर रहा हूँ।

अनुमान के अनुसार माँ गेट पर ही मिली, पापा बरामदे में रखी प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठे हैं, बहन देहरी की सीढ़ियों पर बैठी पिंजरे में बंद खरगोश से कुछ बतिया रही है।

''माँऽऽऽ ... मैं जोर से चिल्लाता हूँ किंतु वह मेरी तरफ नहीं देख रही है।''

''पापा... वह भी अनसुना करके किसी दूसरी तरफ देख रहे हैं।''

''बहन की चुटिया खींचता हूँ, वह मुझे मारने को नहीं दौड़ रही है।''

''मैं फिर से माँ के सामने जाकर खड़ा हो जाता हूँ, इस समय सौम्या भी माँ के पास खड़ी है। माँ रो रही है, उसको देखकर सौम्या भी रोने लगी'' मैं दोनों को चुप करवा रहा हूँ। मैं चीखता हूँ, फिर चीखता हूँ, बार–बार चीखने से मेरा गला फट रहा है।''

''मैं माँ को रोते हुए नहीं देख सकता हूँ। उसको चुप करवाते हुए मैंने देखा कि मेरे हाथ खून से सने हैं, मेरी अँगुलियों के मांस इधर–ऊधर लटकते हुए झूल रहे हैं। मेरा सिर एक शंख में रख दिया गया है। दिमाग शंख के अगले हिस्से में सजा है तथा बाकी हिस्सा शंख के भीतरी ओर फिट कर दिया गया है। मैं झपटता हूँ शंख की ओर किंतु मेरे कटे–पिटे हाथ उसे पकड़ने लायक नहीं रह गये हैं।

दिमाग शंख में स्टोर है फिर भी मुझे कुछ–कुछ याद आता है विक्की तेज ड्राईविंग कर रहा था। पहले मुझे खूब मजा आ रहा था, फिर जब किसी जगह गाड़ी थोड़ी सी लड़खड़ाई तो मैं डर गया और बार–बार धीरे चलने को बोला रहा था। विक्की का दोस्त मुझे गरीब, पैदल चलने की औकात वाला, लड़की जैसा डरपोक और जाने क्या–क्या असहनीय कहने लगा।

इसी बात को लेकर उससे मेरी जबरदस्त लड़ाई हो गई। वह मुझे गालियां दे रहा था, मैं भी उसके साथ गाली–गलौज कर रहा था। बाकी बैठे साथी चुप करवा रहे थे साथ ही वो कह रहे थे कि मैं नौकरी लगने की वजह से इगोयस्टिक हो गया हूँ। थोड़ी सी और गहमा–गहमी बढ़ी और कार टनेल की दीवार से हल्की टकराई थी। खिड़की में लॉक नहीं लगा था वह खुल गई और मैं धड़ाम से नीचे आ गया।

जब मैं गिरा तब मुझे मामूली सी चोट आई थी। मेरा एक हाथ गाड़ी में अटका रहा वो लोग रूके नहीं। मैं चीखता रहा वो मुझे अनसुना करते हुए गाड़ी को तेज रफ्तार में भगाते रहे। मैं घसीटता चला गया।

मेरी चीख जंगलों के पार तक जा रही थी ....बस वो नहीं सुन रहे थे जिन्हें सुनना था ...पहाड़ों से टकराकर मेरी आवाज मुझमें ही प्रवेश कर रही थीं।

मेरे कान तेज आवाज से फट रहे हैं ...मैं माँ को रोते हुए नहीं देख सकता... माँ मेरे शरीर से लिपटकर रो रही है .. .. उसके आँख, नाक से पानी गिर रहा है ...भोला था मेरा बच्चा ...कोई भी प्यार से बोले उसकी बातों में आ जाता था।

पुलिस वर्दी में कुछ लोग खड़े हैं ... उनसे माँ कह रही कह रही है–जानबूझकर मारा है उसके दोस्तों ने .. वरना... उसको यूँ सड़क पर न छोड़ देते ....कहीं पुलिस वाले विक्की और उसके दोस्त को ....? ◆

**पता : 2/6 ए, ग्रीन फ्लैटस, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–110027**

**मो. : 7678499818**

# आरती श्रीवास्तव की एक कविता

आरती श्रीवास्तव

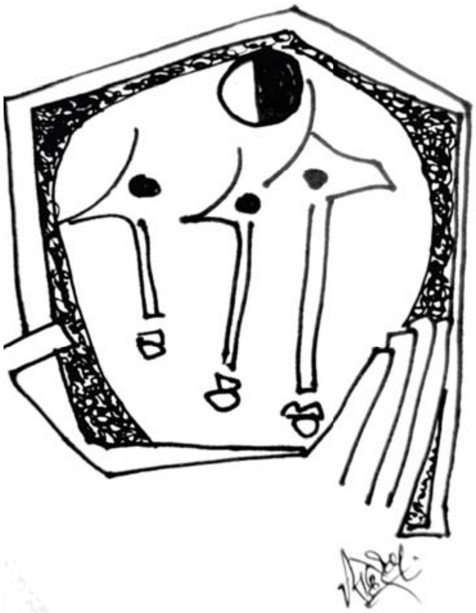

## ज़िंदगी

क्या है
क्यों है
किसके लिये है
कब शुरू हुई
कब ख़त्म होगी
कैसे बितानी है,
कई प्रश्न हैं जो शुरू तो हुए
पर ख़त्म नहीं हो पा रहे हैं,
कभी घर में खोजा, कभी परिवार में ढूँढा,
कभी विद्यालय में पूछा, तो कभी अपनी
सहेलियों से पूछा,
कभी अपनों को देखा,
कभी आस–पास भी देखा,
कभी अपने जैसों को देखा ,
तो कभी अजनबियों को परखा,
कभी मानव और कभी मानवेतर जीवों को देखा,
बड़ी अजीब सी उलझनों में घिरी और,
बार–बार अधिक ही फँसती गयी।
फिर सोचा चलो जी कर ही देखते हैं,
शायद कोई हल निकले,
शायद कोई सुझाव मिले,
जीने में मज़ा भी आया,
जीने में कष्ट भी मिले,

मगर कोई पूर्व निर्धारित उत्तर ना मिला,
फिर ये समझ आया कि ये तो ऐसे ही चलेगी, और जीनी भी पड़ेगी,
अब क्या था हमने खुद जी भर के,
दिल खोल के जीने की ठानी,
और लगे जीने अपनी मर्ज़ी से,
लेकिन कहाँ चलने दी इसने मेरी मर्ज़ी,
अपने अनोखे अनजाने तरीके से,
हर पल नया रूप दिखाती रही,
और अपने हिसाब से हमें,
टहलाती रही, बहलाती रही और रिझाती रही,
जब ये समझ आया तब लगा,
अरे ये तो निकल ही गयी,
अब क्या बचा  और कितना बचा है,
और कब तक बचा है,
अरे, ये तो रेत की तरह फिसलती जा रही है,
चलो, अब जो है उसे तो सार्थक बना लें,
हर पल को जी भर के जी लें,
ना कोई शिकवा, ना शिकायत,
ना घृणा, ना ईर्ष्या,
सुंदरता को सब में खोजे,
ऐसी ख़्वाइश ज़रूर पूरी कर ऐ जिंदगी,
बस यही है आकांक्षा, यही है अभिलाषा,
शायद यही है ज़िन्दगी की परिभाषा,
शायद यही है ज़िन्दगी की परिभाषा।

◆

**पता : बी6 / 502, कोरल वुडस अपार्टमेंट,**
**होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)**
**मो. : 9899112121**

# विजयलक्ष्मी सिन्हा की एक कविता

विजयलक्ष्मी सिन्हा

कल जब उन्हें देखा
घर की याद आ गई
बचपन याद आ गया
ऐसा नहीं कि तुमसे बेहतर
किसी को देखा ना हो देखे हैं।
नायाब ख़ुशबू वाले, रंगों वाले
फलों वाले पौधे पेड़
मगर जो बात नीम के पेड़ और पीपल के पेड़ में पाती हूं
वह किसी और में नहीं
इन दोनों को देखकर घर की छत याद आ जाती है
बचपन याद आ जाता हैं
गर्मी की छुट्टियां याद आ जाती हैं
न जाने कितनी यादें हैं उनसे जुड़ी
बंदरों का छत पर उछलना
चिड़ियों का चहचहाना कोयल का गुल
गर्मी की छुट्टी में पहाड़े याद करना
स्लेट पर लिखना और भीगे कपड़े का
पोतड़ा बनाकर उसे मिटाना वो ही हमारा डस्टर होता था।
उसी छत पर हमारे बाबा और दादी भी सोते थे
वहां सुराही का पानी लेकर दादी अक्सर
बाबा के लिए बेल का शरबत बनाती थी
ये सारी यादें नीम और पीपल के पेड़ में समाई हुई थीं बस
जब तुम्हें देखती हूं तो घर याद आ जाता है नीम की दातुन
नीम की नरम पत्तियों को चबाना
और रात में उसी पेड़ को दिखा कर
हमें धमकाकर सुला दिया जाता
पीपल के पेड़ की भी ख़ूब कहानियां थीं
भूत प्रेत चुड़ैल जादू टोना
सब कुछ इस नीम और पीपल के बीच में था। बड़ी अजीब सी है
हमारा रिश्ता किससे किससे बनता जाता है
हमें पता ही नहीं चलता।

◆

पता : 6–ए/8, आर्शीवाद एन्कलेव, देहरादून–248001
मो. : 7417131996

# समीर तिवारी की कविताएँ

समीर तिवारी

## 1

मणिधरों से मित्रता तो कर रही हो
ध्यान रखना !
ये गरल का बस तुम्हें उपहार देंगे।

क्षीर का प्याला इन्हें जब तक मिलेगा
ये तुम्हें सम्मान सज्जित अंक लेंगे।
जिस दिवस तुम तेज़ कुछ इनसे चलोगी
ये तुम्हारे पांव पर ही दंश देंगे।

चंदनों से घर बनाने जा रही हो
ध्यान रखना !
ये तुम्हें हरगिज़ न स्वागत द्वार देंगें।

जिस तरह गिरगिट बदलते रंग अपना
ठीक वैसे केंचुली ये छोड़ते हैं।
प्यास इनकी जिस घड़े ने है बुझाई
ये उसे ही सबसे पहले फोड़ते हैं।

जिस जलाशय का तुम्हें जल भा रहा है
ध्यान रखना !
ये उसी घट के मगर हैं मार देंगे।

जो हुआ निर्माण तुमसे आजतक सब
ध्येय इनका है उसे निर्वाण करना।
तुम अहल्या सी व्रती हो पावनी हो,
लक्ष्य इनका बस तुम्हें पाषाण करना।

प्रीत प्रतिमा अनगिनत तो गढ़ रही हो
ध्यान रखना !
ये तुम्हें बस देहमय व्यापार देंगे।

## 2

आँसुओं से हम प्रणय का
घाव उस दिन धो रहे थे।
तुम विदा जब हो रहे थे !

ब्याह की उस रात जब तुम बन संवर कर ठन रही थी।
एक अनजानी कथा का तुम कथानक बन रही थी।
अंततः तुमने हमारी ख़त्म कर दी सब कहानी।
उस अपरिचित हाथ से लेकर शुभे सिंदूरदानी।

देखकर वह दृश्य उस पल
हम तड़फकर रो रहे थे।
तुम विदा जब हो रहे थे !

भोर होते ही तुम्हारी इक सहेली पास आई।
भेंट में मुँदरी, कलावा, पत्र औ तस्वीर लाई।
पत्र में तुमने लिखा था अब मिलन संभव नहीं है।
भाग्य में अपने प्रिये अब प्रीत का उद्‌भव नहीं है।

हाय ! उस दिन भाग्य की हम
हर विवशता ढो रहे थे।
तुम विदा जब हो रहे थे !

पालकी में जब तुम्हें परिजन सभी बैठा रहे थे।
दोष गुण सम्बंध का सब वो तुम्हें समझा रहे थे।
आंख जब तुमने सभी के सामने मुझसे मिलाई।
अश्रु से हमने करी तब एक दूजे की विदाई।

याद में उस दिन तुम्हारी
हम स्वयं को खो रहे थे।
तुम विदा जब हो रहे थे !

◆

**पता :गद्‌दा गौतम, कैप्टनगंज, बस्ती, उ.प्र.–272131**
**मो. : 094555 68837**

# हिमानी वर्मा की दो कविताएँ

हिमानी वर्मा

## हाँ मैं एक लड़की हूँ

हाँ मैं एक लड़की हूँ !
ज़िम्मेदारी और सलीके से भरी हुई,
बचपन से यही सिखाया गया मुझे,
मुझे मेरी हद बताई गयी है,
मेरी हद एक चहारदीवारी है,
जिसमें मुझे बचपन से लेकर
बुढ़ापे तक कैद किया गया।।

मुझे जननी का सामान समझा गया,
चुप रहना सिखाया गया है,
मेरा दायरा बताया गया है,
हाँ मैं लड़की हूँ !
मुझे मर–मर कर जीना सिखाया गया है।।
ऐसा नहीं, मुझमें नादानियाँ नहीं
ऐसा नहीं, मुझमें आज़ादी की चाह नहीं
ऐसा नहीं, मुझमें खुले आसमान में उड़ने की चाह नहीं,
ऐसा नहीं, मुझमें ख्वाबों में रंग भरने की आदत नहीं,
ऐसा नहीं, मुझमें दुनिया जीत लेने का हुनर नहीं,
शायद इसलिए भी ऐसा किया गया होगा।
कहीं ऐसा न हो कि मैं पिजड़े से निकल कर

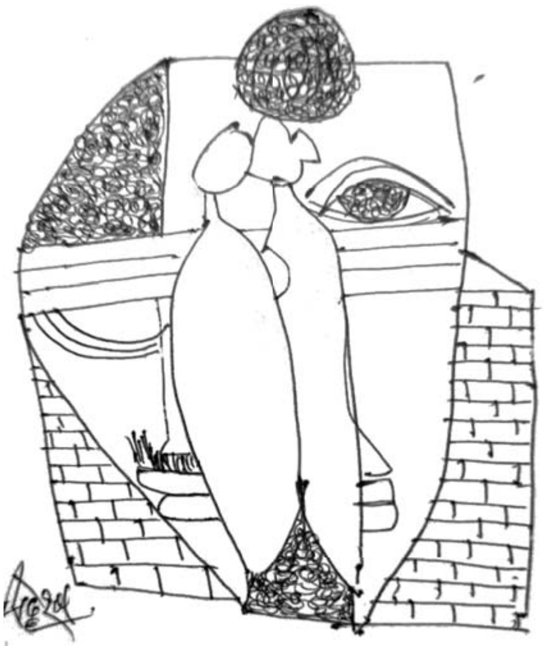

अपनी उड़ान से पूरा ब्रह्मांड ना नाप दूँ,

कि कहीं मैं पुरूषों से बेहतर समाज का निर्माण न कर दूँ।।

इसलिए मुझे कैद किया गया, ज़िम्मेदारियों से दबाया गया

सपनों को मारा गया,

आज़ादी को छीना गया

पल–पल मुझे रोका गया

हर वो काम करने से

जो मैं पुरूषों से बेहतर कर सकती थी।

हाँ मैं लड़की हूँ !

मुझे मर–मर के जीना सिखाया गया है।।

## जो मेरे अपने थे

वह जो मेरे अपने थे

अब बदल गए हैं,

ढलती शाम की तरह

वह भी ढल गए हैं,

इस सामाजिक होड़ में

आगे निकल गए हैं,

वह जो मेरे... ... ...

अब तो रिश्तों में भी

अपना पराया होने लगा है,

जो मेरी खुशी के लिए

दूसरों से लड़ जाया करते थे,

वह जो मेरे... ... ...

दौलत की खुमारी

सिर चढ़के ऐसी बोली है,

कि अब वक्त ही नहीं रहा

परिवार के लिए

परिवार में भी मतभेद होने लगे हैं,

वह जो मेरे... ... ...

जो मेरी एक ख्वाहिश पूरी करने के लिए

खुद से भी लड़ जाया करते थे

हमसे दूर होने के सपने से

डर जाया करते थे,

वह जो मेरे... ... ...

एक समय वह भी था

जब नादानियों पर डांटते थे

आंसू आते ही,

गले लगाया करते थे

वह जो मेरे... ... ...

न जाने ये कब और कैसे हो गया

वह जो परिवार को इतना मानते थे, चाहते थे,

वह न जाने कैसे बदल गए हैं।

वह जो मेरे... ... ...

◆

पता : 705, शेखूपुरा, विकास नगर,
लखनऊ–226022
मो. : 9695955491

# आस्था और अंधविश्वास के बीच की पड़ताल करती एक किताब

❑ डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

**माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर,**
**कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।**

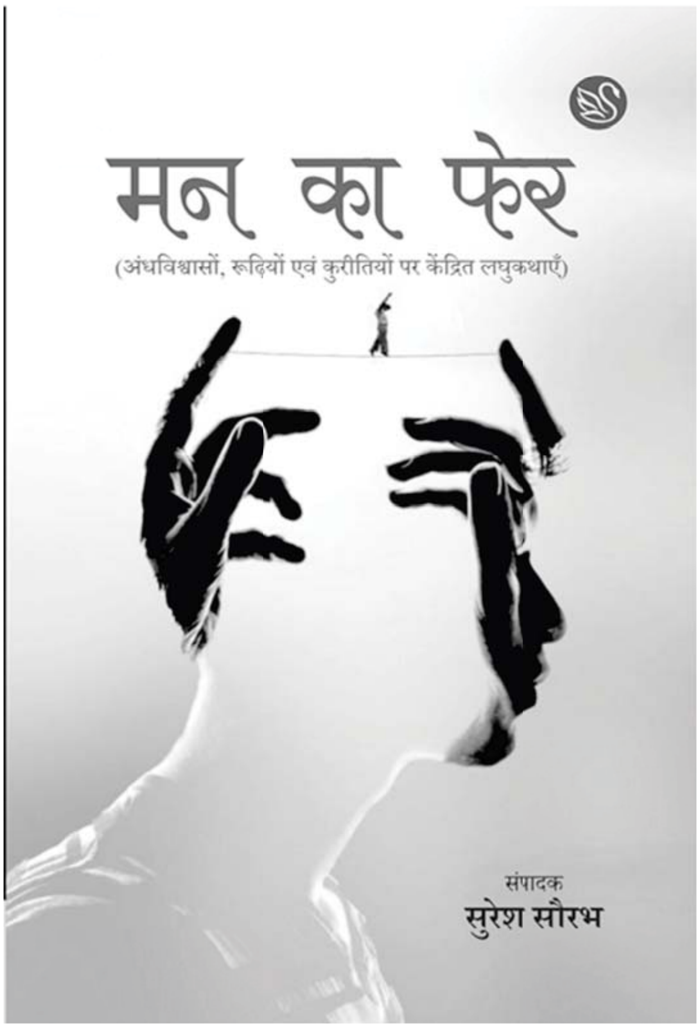


कबीर दास जी इस दोहे में कहते हैं कि, बहुत लंबे समय तक माला घुमा लें, लेकिन यदि मन का भाव नहीं बदल पाया तो बेहतर कि हाथ की माला को फेरना छोड़ मन के मोतियों को फेरा जाए अथवा बदला जाए। इसी भावना के साथ, लघुकथाकार सुरेश सौरभ के संपादन में संपादित लघुकथा साझा संग्रह 'मन का फेर' एक विशिष्ट संकलन है जो अंधविश्वास और उन पुरातन रीति–रिवाज़ों की जटिल परतों को गहराई से उजागर करता है, जिनकी आज के समय में आवश्यकता समाप्त होती जा ही है। रूढ़ियों एवं कुरीतियों की संज्ञा एक ऐसी संज्ञा है जो पुरानी प्रथाओं को नवीन समय देता है। आज की रूढ़ि किसी समय की सर्वमान्य प्रथा हो ही सकती है।

जिन घटनाओं का कोई कारण ज्ञात नहीं हो सका, उसे ईश्वरीय कारण कहा गया और जब कारण ज्ञात हुआ तो, वह ज्ञात कारणों के मध्य स्थान पा गया। आज भी हो सकता है कि, कोई डॉक्टर किसी की मृत्यु का कारण कोई बीमारी बता पाएं, लेकिन उस बीमारी का कारण अज्ञात रहे, तब कोई कह ही सकता है कि, ईश्वर की मर्ज़ी थी। कुल मिलाकर अंधविश्वास का कारण, कारण का अज्ञान है और यह अज्ञान सदैव और सर्वस्थानों पर किसी ना किसी घटना के लिए रहेगा ही तथा समय के साथ वह कारण ज्ञात भी होगा।

यह संग्रह विभिन्न प्रतिभाशाली लेखकों के दृष्टिकोणों की एक पच्चीकारी प्रस्तुत करता है। लघुकथाओं के माध्यम से, यह संग्रह, मानव के उस विश्वास को उजागर करता है, जिनके कारण या तो अब ज्ञात हो चुके हैं या फिर जिनके कारण समाज में अनावश्यक भय व्याप्त है। यह संग्रह उन परंपराओं पर भी प्रकाश डालता है जो अपनी प्रासंगिकता अब खो चुके हैं।

'समाज को शिक्षित करती लघुकथाएं' शीर्षक से वरिष्ठ पत्रकार अजय बोकिल की अद्भुत भूमिका और सुरेश सौरभ के विचारोत्तेजक सम्पादकीय लिखा है। इस संकलन की विशेषताओं में से एक लघुकथाओं की शैलियों में विविधता है। प्रत्येक लेखक पाठकों के लिए अपने अनुसार रोचक कथ्यों की समृद्धता प्रदान कर रहा है। योगराज प्रभाकर, संतोष सूपेकर, मधु जैन, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, मनोरमा पंत, विजयानंद 'विजय', सुकेश साहनी, हर भगवान चावला, सुरेश सौरभ, बजरंगी भारत, राम मूरत 'राही' सहित 60 उत्तम चयनित लघुकथाओं के लेखक समसामयिक मुद्दों पर रंग बिखेर रहे हैं। समय के साथ पुरानी पड़ती परंपरा एक बोझ के समान है, उस बोझ से जूझ रहे व्यक्तियों से लेकर अंधविश्वास में डूबे समुदायों के भयावह वृत्तांत तक, यह पुस्तक भीतर हमें विचार करने को प्रेरित करता है।

जो बात इस संकलन को अलग करती है, वह पूर्वकल्पित धारणाओं को चुनौती देने और आत्मनिरीक्षण को प्रेरित करने की क्षमता है। कल्पना के लेंस के माध्यम से, लेखक कुशलतापूर्वक प्रथाओं की जटिलताओं और विश्वसनीयता का विश्लेषण करते हैं, जिससे पाठक सवाल उठाने और अन्वेषण की एक विचारोत्तेजक यात्रा हेतु मानसिकता विकसित कर सकते हैं।

इसके अलावा, 'मन का फेर' माहौल और मनोदशा की भावना पैदा करने की क्षमता में उत्कृष्ट है। लगभग प्रत्येक लघुकथा एक विशिष्ट वातावरण को उजागर करती है जो संग्रह के अंतिम पृष्ठ को पलट चुकने के बाद भी लंबे समय तक दिमाग में बनी रहती है। अधिकतर रचनाओं का गद्य विचारोत्तेजक और गूढ़ है, जो पाठकों को समान निपुणता के साथ यथार्थ और काल्पनिक दोनों दुनियाओं में खींच लेता है। किसी भी आस्था का वैज्ञानिक विश्लेषण सत्य और असत्य की खोज करता है। कई बार हम अंधविश्वास करते हैं और कई बार अंध–अविश्वास, जबकि दोनों ही गलत हैं।

यद्यपि संपूर्ण संकलन योगदान देने वाले लेखकों की प्रतिभा का प्रमाण है, तथापि कुछ रचनाएं ऐसी भी हैं जो विशेष रूप से यादगार बनी हैं और पाठकों के मानस पर एक अमिट छाप छोड़ जाती है।

निष्कर्षतः, 'मन का फेर' एक उत्कृष्ट रूप से तैयार किया गया संकलन है जो अंधविश्वास और पुरानी प्रथाओं की जटिलताओं और विश्वसनीयता की गहराइयों को बारीकियों के साथ उजागर करता है। यह पाठकों को मानवीय स्थिति और विश्वास पर विचारोत्तेजक अन्वेषण प्रदान करता है। यह मानसिकता केवल धार्मिक आस्था तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विज्ञान का नाम लेकर अंधविश्वास पैदा करने वाले पाखंडियों की भी कोई कमी नहीं। कुल मिलाकर जिस बात को हम जानकर सही या गलत कहते हैं, वही सत्य की राह है और जिसे मानकर सही या गलत कहते हैं, वह असत्य की राह हो सकती है। ◆

पुस्तक – मन का फेर (साझा लघुकथा संग्रह)

संपादक – सुरेश सौरभ

प्रकाशक – श्वेतवर्णा प्रकाशन नोएडा

ISBN & 978&81&968883&9&8

पृष्ठ संख्या–144

मूल्य – 260 (पेपर बैक)

पता : 3 प 46, प्रभात नगर सेक्टर–5,
हिरण मगरी, उदयपुर – 313002
मो. : 9928544749

# प्रीति गुप्ता की एक कविता

## इतनी सी ख़्वाहिश !!

प्यार की चार दीवारें होतीं
स्नेह की उस पर छत होती
खुशियों की एक खिड़की होती
सुख का एक दरवाज़ा होता
चाहत का एक आँगन होता
कलियों की जिसमें क्यारी होती
मेहनत की दो रोटी मिलती
धूप–छाँव की एक चादर होती
समय का कोई अभाव न होता
प्रेम, विश्वास से भरा होता
दुःख की कोई गुंजाइश न होती
ऐसा जीवन जीने के लिये
लम्बी उम्र भी कम पड़ जाती,
न जमीं चाही थी
न आसमां माँगा था
न दौलत चाही थी
न गुलिस्ताँ माँगा था,
प्यार में थोड़ी सी
वफा माँगी थी
दिल में बसने की
जगह चाही थी
बस इतनी सी ही तो
ख्वाहिश थी......

◆

पता : ए–501, प्लूमेरिया, विभूतिखण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ–226010
मो. : 9565181329

भारत सरकार के रजिस्ट्रार आफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या 33122/78
भारतीय डाक विभाग की डाक पंजीयन संख्या–एल.डब्लू./एन.पी. 432/2006

# सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

## प्रमुख प्रकाशन

| | | |
|---|---|---|
| **उत्तर प्रदेश मासिक** | : | समकालीन साहित्य, संस्कृति, कला और विचार की मासिक पत्रिका समूल्य उपलब्ध एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र। |
| **नया दौर (उर्दू)** | : | सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषय की एक उर्दू मासिक पत्रिका, एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र। |
| **वार्षिकी** (हिन्दी/अंग्रेजी) | : | उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के विस्तृत आंकड़ों एवं सूचनाओं का वार्षिक विवरण मूल्य रु. 325/– मात्र। |

### महत्वपूर्ण प्रकाशनों के लिए सम्पर्क करें

**सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र.**
**दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ**
**उत्तर प्रदेश के समस्त जिला सूचना कार्यालय**

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ में मुद्रित